SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

यमुनातीरे

अंक : तेरह

हिन्दी वार्षिक पत्रिका (वर्ष 2025)

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार)

दिल्ली-110054

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
(सदैव ऊर्जावान; निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा! जय हिंद!

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

यमुनातीरे

अंक : तेरह

हिन्दी वार्षिक पत्रिका
(वर्ष 2025)

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार)

दिल्ली-110054

अंक: 13वां
वर्ष: 2025

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार), दिल्ली
वार्षिक हिन्दी पत्रिका

संरक्षक

श्री खालिद बिन जमाल
महानिदेशक

प्रकाशन परामर्शदातृ

श्री टी. इमलिवाबांग कबज़ार
निदेशक (मुख्यालय)

सम्पादक मण्डल

श्रीमती गीता मेहता
(सहायक निदेशक)

डॉ. शिप्रा पाण्डे
(सहायक निदेशक)

सह-संपादक

श्री विकास सैनी
(कनिष्ठ अनुवादक)

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ, रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार व भावनाएँ हैं।
कार्यालय या संपादक मण्डल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

पृ.सं.

संदेश (श्री खालिद बिन जमाल, महानिदेशक) ... 6

संदेश (श्री टी. इमलिवाबांग कबज़ार, निदेशक मुख्यालय) ... 7

संपादकीय (श्रीमती गीता मेहता एवं डॉ. शिप्रा पाण्डे, सहायक निदेशक) ... 8

पृ.सं.

1. ***धैर्य और बुद्धिमत्ता – एक दूसरे के पूरक*** ... 13
   श्रीमती गीता मेहता, सहायक निदेशक

2. ***मां*** ... 15
   श्रीमती ज्योति दीक्षित, सहायक निदेशक

3. ***कटुसत्य*** ... 17
   श्री मुकेश कुमार सक्सेना, स.ले.प. अधिकारी

4. ***बनारस*** ... 20
   सुश्री पल्लवी शर्मा, स.ले.प. अधिकारी

5. ***विडम्बना*** ... 22
   श्रीमती गीता रानी, वरिष्ठ निजी सचिव

6. ***महिला दिवस की सार्थकता*** ... 24
   श्रीमती नन्दिनी दत्ता राय, स. पर्यवेक्षक

7. ***नौकरी और मेरा संसार*** ... 26
   श्री अरुण कुमार, स.ले.अधिकारी

8. ***बीज का महत्त्व*** ... 28
   श्री आशुतोष कुमार श्रीवास्तव, व.ले.प.अ.

9. ***दैनिक यात्री*** ... 30
   श्री मोहम्मद इमरान खान, स.ले.प.अ.

10. ***गंगोत्री धाम एवं गौमुख यात्रा*** ... 32
    श्री विकास सैनी, क.हि.अनुवादक

11. ***शादी के सात साल*** ... 34
    श्री पंकज मोहन जायसवाल, व.लेखापरीक्षक

पृ.सं.

12. ***मैं नदी हूं*** ... 35
    सुश्री वीणा सुधीर नाईक, व.ले.प.अ.

13. ***एक अनमोल तोहफा*** ... 37
    श्री विजय कुमार शर्मा, कनिष्ठ अनुवादक

14. ***'खुली आंखों से देखा है एक सपना'*** ... 39
    श्री आनंद राघव मिश्र, लेखापरीक्षक

15. ***द्वंद्व*** ... 41
    सुश्री भाव्या सक्सेना

16. ***बुलबुला*** ... 43
    श्री सन्तोष कुमार, लेखापरीक्षक

17. ***उम्मीदों का सूरज*** ... 45
    श्री रिंकू, लेखापरीक्षक

18. ***आशा का दीप*** ... 47
    श्री अभिषेक कुमार, लेखापरीक्षक

19. ***आंखें*** ... 49
    श्री नवीन कुमार, लेखापरीक्षक

20. ***ऑडिट का डर*** ... 51
    श्री ामीम अहमद, लेखापरीक्षक

21. ***हिन्दी पखवाड़ा 2024 की प्रतियोगिताओं एवं समापन समारोह की झलकियां*** ... 54

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि वार्षिक हिन्दी गृह-पत्रिका "यमुनातीरे" के 13वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। भारत में विभिन्न क्षेत्रीय भाषाएं है, इन क्षेत्रीय भाषाओं में संपर्क स्थापित करने में हिन्दी की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। किसी भी राष्ट्र की राजभाषा उस देश की संस्कृति का दर्पण होती है। वह अनुभूति और भावना के धरातल पर सारे राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोती है। यह हमारा कर्तव्य है कि राष्ट्रीय हित एवं एकात्मकता के लिए हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करें।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए गृह-पत्रिकाओं का उद्देश्य है कि अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी में मूल लेखन एवं अपने शासकीय कार्यों को हिन्दी में करने के लिए प्रेरित करना। मुझे विश्वास है कि कार्यालय द्वारा प्रकाशित की जा रही गृह पत्रिका "यमुनातीरे" का यह अंक राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध होगा।

इस अवसर पर मैं सभी लेखकों, संपादक मंडल, अधिकारियों एंव कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं और इस रचनात्मक यात्रा की निरंतर सफलता की कामना करता हूं।

खालिद बिन जमाल
महानिदेशक

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय वार्षिक गृह-पत्रिका यमुनातीरे" के 13वें अंक का प्रकाशन कर रहा है। हिन्दी सिर्फ साहित्य की भाषा नहीं रही है। हिन्दी हर क्षेत्र में अपना स्थान बना रही है। विज्ञान, तकनीक, नवाचार, शिक्षा, मीडिया में हिन्दी भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका है।

संविधान के अनुसार राजभाषा विभाग का दायित्व केन्द्र सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/उपक्रमों आदि में अधिकाधिक सरकारी कामकाज हिन्दी में करने के लिए प्रेरित, प्रोत्साहित करना है। इस कड़ी में पत्रिका "यमुनातीरे" अपनी भूमिका का निर्वहन कर रही है। उत्कृष्ट लेखों के साथ राजभाषा गतिविधियों को समाहित करती पत्रिका "यमुनातीरे" सदैव से हिंदी प्रेमियों के लिए प्रेरणादायी रही है।

मैं पत्रिका के 13वें अंक के सफल प्रकाशन के लिए इस पत्रिका के संपादन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूं तथा आशा करता हूं कि भविष्य में भी ऐसे सफल और ज्ञानवर्धक अंक नियमित रूप से प्रकाशित होते रहेंगे।

टी. इमलिवाबांग कबज़ार
निदेशक (मुख्यालय)

सम्पादकीय

हमें, हर्ष है कि आज हम अपने कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका यमुनातीरे का तेरहवां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। यह पत्रिका न केवल हमारी भाषा और संस्कृति का प्रतिबिंब है, बल्कि हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक, राजभाषा हिंदी के संवर्धन, कार्यालय की सामाजिक जिम्मेदारियों और नवोन्मेषी विचारों की साझा यात्रा है। यमुनातीरे न केवल हमारे कार्यालय की उपलब्धियों का दर्पण है, बल्कि कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के समर्पण, रचनात्मकता और टीम भावना का प्रतीक है। इससे पहले कई सफल संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। यह अंक भी हमारी भाषा, संस्कृति और नवाचार की त्रिपक्षीय प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

पत्रिका में प्रस्तुत कविताएँ, प्रेरक लेख और साहित्यिक पृष्ठ हिंदी के प्रति प्रेम को उजागर करते हैं। हिंदी भाषा के प्रचार.प्रसार एवं राजभाषा संवर्धन की दिशा में योगदान देते हैं। हमारी आशा है कि यह पत्रिका विभागीय सहयोग, नवचेतना, और हिंदी भाषा–प्रेम को प्रोत्साहित करेगी।

हम अपनी पूरी टीम, प्रशासनिक सहयोगियों, लेखकों और पाठकों का धन्यवाद करते हैं – जिन्होंने इस पत्रिका की रूप–रेखा तय करने, लेख तैयार करने और संपादन कार्य में अपना समय व ऊर्जा समर्पित की। विशेष रूप से उन सभी रचनाकारों का आभार, जिन्होंने अपनी अनमोल कलम से यमुनातीरे को समृद्ध किया।

यमुनातीरे का यह अंक आप सभी सुधी पाठकों को सौंपते हुए हमें अत्यंत प्रसन्नता हो रही है तथा पत्रिका को और अधिक सारगर्भित और सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके मूल्यवान सुझावों तथा प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

डॉ. शिप्रा पाण्डे
सहायक निदेशक (राजभाषा)

श्रीमती गीता मेहता
सहायक निदेशक (राजभाषा)

आपके पत्र

महालेखाकार (ले0 एवं ह0) का कार्यालय
वीरचंद पटेल पथ,
पटना, बिहार - 800001

OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E),
BIRCHAND PATEL PATH
PATNA, BIHAR - 800001

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पत्रांक/Letter No.:- हिं.अ./ले. व हक./5/पत्रिका प्रतिभाव/24-25/221
दिनांक/Date:- 02.01.2025

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार),
दिल्ली- 110054।

विषय:- हिंदी पत्रिका "यमुनातीरे" के 12वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "यमुनातीरे" के 12वें अंक के ई-संस्करण की प्रति ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष आभार व्यक्त करते हैं। पत्रिका की साज-सज्जा, विषय एवं आवरण पृष्ठ स्वतः ही पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं न केवल उच्चकोटि की ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी व पठनीय हैं अपितु सामाजिक पक्षों से जुड़े कई संदेश भी देती हैं। पत्रिका में समाहित कुछेक रचनाएँ यथा, **"आप बात नहीं समझे (व्यंग)"**, **"डिजिटल टेक्स्ट की लोकप्रियता"**, एवं **"किसान अन्नदाता या भाग्यविधाता"** विशिष्टतः उल्लेखनीय हैं। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक की भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है। पत्रिका के सतत् प्रकाशन एवं उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,

सुनील कुमार
हिंदी अधिकारी/हिंदी अनुभाग

Phone: 0612-2225634 Fax: 0612-2221056 Email: agaebihar@cag.gov.in

---

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
Director General of Audit, Central Expenditure (Environment and Scientific Departments)
Mumbai Branch, Nav Bhavan, R.K.Marg, Ballard Estate, Mumbai-400 001
Email: bresdmumbai@cag.gov.in
Contact No.: 022- 2082 -3903/ 2146/ 4609, Fax: 022-2263-2414

सं.स्था./XIII(14)/विविध पत्रिकाएँ/भाग-III/2024-25/ दिनांक:25-02-2025

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार)
नई दिल्ली

विषय: हिन्दी पत्रिका 'यमुनातीरे' के 12वें अंक की ई-प्रति की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय के संदर्भ में आपके कार्यालय पत्र ईमेल दिनांक: 29.10.2024 को संज्ञान में लें। इस संबंध में आपके कार्यालय से हिन्दी पत्रिका 'यमुनातीरे' के 12वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, जिसके लिए यह कार्यालय आपका आभारी है।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। 'मेरे दो अनमोल रत्न', 'पर मंज़िल यह नहीं', 'इंतज़ार', 'सकारात्मकता ही समाधान है' आदि रचनाएं विशेष रूप से पठनीय एवं रुचिकर हैं। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Digitally signed by Sudeb Sikder
Date: 25-02-2025 16:32:37
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ प्रशासन

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS EPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय,मुंबई
O/o the PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT (CENTRAL), MUMBAI
C-25, Audit Bhavan, Bandra Kurla Complex, Mumbai- 400 051
e-mail – pdacentralmumbai@cag.gov.in

सत्यमेव जयते

336

सं. प्र.नि.ले.प.(कें.)/रा.भा.अ./पत्रिका समीक्षा/ 2024-25/67 दिनांक 2/1/2025

सेवा में,

व.ले.प.अ./प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित एवं संचार),
दिल्ली- 110054

विषयः कार्यालयीन पत्रिका "यमुनातीरे" के 12वाँ अंक की समीक्षा संबंधी।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका "यमुनातीरे " के 12वाँ अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद। इस अंक के आवरण पृष्ठ,साज-सज्जा एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र मनोरम एवं आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, मनमोहक एवं रोचक है।

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

व.ले.प.अ./राजभाषा

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 462011

क्र.हि.क./फा-7/ जावक - 73 दिनांक 06.12.2024

प्रति,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय-महानिदेशक (वित्त एवं संचार),
दिल्ली-110054

विषय : हिन्दी पत्रिका "यमुनातीरे" के 12वें अंक की पावती बाबत ।
संदर्भ : आपके पत्र क्रमांक-रा.भा.अनु./हिन्दी पत्रिका प्रकाशन/2022/458 दिनांक 29.10.2024 ।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "यमुनातीरे" के 12वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद । पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर मेरे दो अनमोल रतन (व्यंग्य), आप बात नहीं समझे (व्यंग्य), डिजिटल टेक्स्ट की लोकप्रियता, बुढ़ापा, जल संरक्षण नवीन विचार एवं पहल, आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं ।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम हैं। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं ।

प्रफुल्ल
हिन्दी अधिकारी/हिन्दी कक्ष

कार्यालय: उपनिदेशक,वित्त एवं संचार लेखा परीक्षा कार्यालय, बेंगलूरु
OFFICE OF THE DEPUTY DIRECTOR
FINANCE & COMMUNICATION AUDIT OFFICE, BENGALURU

सं.हि.क./हि.पत्रि.प्र./2024-25/101 दिनांक: 04.12.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय (महा)निदेशक लेखापरीक्षा (वित व संचार),
दिल्ली- 110054

विषय - हिंदी पत्रिका 'यमुनातीरे' के बारहवें अंक की पावती ।

संदर्भ – क्रमांक रा.भा.अ./हिंदी पत्रिका प्रकाशन/2022/458 दिनांकित 29/10/2024

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका 'यमुनातीरे' के बारहवें अंक की एक ई-प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका के मुखपृष्ठ पर भारत मंडपम की छवि अति मनोरम प्रतीत होती है। श्री मुकेश कुमार सक्सेना की कविता 'शिक्षक', श्री प्रदीप कुमार चौधरी का व्यंग्य लेख 'मेरे दो अनमोल रतन', श्रीमती नंदिनी दत्त रॉय की कविता 'बुढ़ापा', श्री नवीन कुमार मोरल का लेख 'किसान अन्नदाता या भाग्यविधाता', तथा श्रीमती गीता मेहता की कविता 'प्रकृति' आदि रचनाएँ सराहनीय हैं। अन्य सभी रचनाएँ भी पठनीय एवं विचारणीय हैं।

आशा करती हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

सधन्यवाद ।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

Digitally signed by
K jalaja
Date: 04-12-2024 12:39:17

भारत सरकार/GOVT.OF INDIA
कार्यालय : प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओड़िशा, भुवनेश्वर- 751001
O/O THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), ODISHA, BHUBANESWAR-751001

स-रा.भा.अ./प.प्रति./37/2024-25/293 दिनांक:27.11.2024

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
कार्यालय- महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित एवं संचार)
दिल्ली-110054

विषयः- वार्षिक गृह पत्रिका "यमुनातीरे" के 12वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली वार्षिक गृह पत्रिका "यमुनातीरे" के 12वें अंक का ई-संस्करण ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत मनमोहक है। पत्रिका की आंतरिक साज-सज्जा, विषय एवं कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र स्वतः ही पाठकों का ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ न केवल भावपूर्ण, प्रेरणादायी व ज्ञानवर्धक हैं बल्कि सामाजिक पक्षों से जुड़े कई संदेश भी उजागर करते हैं। विशेष तौर पर 'मेरे दो अनमोल रत्न', 'इन्तजार', 'संस्कार', 'डिजिटल टेक्स्ट की लोकप्रियता' आदि रचनाएं प्रेरक, रुचिकर एवं सराहनीय हैं। राजभाषा हिंदी के विकास एवं कार्यान्वयन की दिशा में यह एक स्वर्णीम प्रयास है।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादक मंडल एवं सभी रचनाकार निश्चय रूप से बधाई के पात्र हैं। पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

मनोरंजन पाणिग्राही
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB, CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email-agaupunjab@cag.gov.in

क्रमांक- हिं.क./हिंदीपत्रिकासमीक्षा/2024-25/I/800445/2024 दिनांक:26-11-2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा(वित्त एवं संचार)
दिल्ली-110054

विषय:- हिन्दी पत्रिका "यमुनातीरे" के 12वें अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "यमुनातीरे" का 12वाँ अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ प्रशंसनीय हैं:-

क्र. सं.	रचनाकार	रचनाएँ
1	श्री मुकेश कुमार सक्सेना	भार
2	श्री प्रदीप कुमार चौधरी	आप बात नहीं समझे
3	सुश्री सीमा कुमार	जल संरक्षण : नवीन विचार एवं पहल

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया

EKTA
(हिंदी अधिकारी)

Digitally signed by
Ekta
Date: 26-11-2024 14:59:16

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) लखनऊ
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of the Principal Director of Audit (Central) Lucknow

पत्रांक सं.: प्र.म.नि.(के.)/प्रशासन/रा.भा.हि./फा.सं.82047/2024-25/I/799871/2024
दिनांक: 25-11-2024

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार),
दिल्ली-110054

विषय - वार्षिक गृह पत्रिका "यमुनातीरे" के 12वें अंक की ई-प्रति के सम्बन्ध में ।

आदरणीय महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित वार्षिक गृह पत्रिका "यमुनातीरे" के 12वें अंक की ई- प्रति प्राप्त हुई है । एतदर्थ धन्यवाद | पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है |
पत्रिका का यह अंक साज-सज्जा एवं मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी बन पड़ा है साथ ही पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं **"डिजिटल टेक्स्ट की लोकप्रियता"**, **"जल संरक्षण : नवीन विचार एवं पहल"** एवं **"किसान अन्नदाता या भाग्य विधाता"** ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी एवं पठनीय हैं| पत्रिका में समाविष्ट अन्य सभी रचनायें अत्यंत प्रेरक, रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनाएँ ।

भवदीय,

Digitally signed by
Ritesh Chhabra
Date: 25-11-2024 17:33:29

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /प्रशासन

तृतीय तल, ऑडिट भवन, टी०सी०-35-वी-1, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (उ०प्र०) दूरभाष :0522-2970789, फैक्स :0522-2970780 (प्र.नि.)
3rd Floor, Audit Bhawan, T.C.-35-V-1, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow-226010 (U.P.) Phone: 0522-2970789, Fax: 0522-2970780 (PD)

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, ओडिशा, पुरी शाखा, पुरी-752003
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), ODISHA, PURI BRANCH, PURI

सं.-प्रशंसा पत्र/09/2024-25/२२ दिनांक:-22 .11.2024

सेवा में,
कार्यालय-महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार),
दिल्ली-110054

विषय : हिन्दी पत्रिका "यमुनातीरे" के 12वें अंक की प्राप्ति।

महोदय,

आपकी हिन्दी पत्रिका 'यमुनातीरे' के 12वें अंक की प्राप्ति हुई। धन्यवाद।

"यमुनातीरे" उत्कृष्ट रचनाओं का सुन्दर संकलन है। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ सहित अन्य कार्यक्रमों के चित्र अत्यंत सुखद व अनुभूतिपूर्ण होने के साथ-साथ पत्रिका को और अधिक सुंदरता प्रदान कर रहे हैं। पत्रिका में निहित संपूर्ण रचनाएँ पठनीय, रोचक, ज्ञानवर्धक एवं महत्वपूर्ण संदेशों से परिपूर्ण है।इनमें से "भार", "मेरे दो अनमोल रतन (व्यंग्य)", "इंतजार" और "सकारात्मकता", विशेष अच्छी हैं। आशा है कि यह पत्रिका आगे भी अपने रोचक विषयों से पाठकों का ज्ञानवर्धन एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सार्थक मंच उपलब्ध कराती रहेगी।

पत्रिका के संपादक मण्डल के सभी सदस्यों एवं पत्रिका के उज्जवल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

22/11/2024

वरिष्ठ लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I),
तमिलनाडु का कार्यालय,
"लेखापरीक्षा भवन", 361, अण्णा सालै, तेनाम्पेट, चेन्नै-600018

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I), TAMILNADU, "LEKHA PARIKSHA BHAVAN" 361, ANNA SALAI, TEYNAMPET, CHENNAI-600018

सं. प्र.मले. (लेप-I)/हिं. अनु./प्रशं. पत्र/14-02/2024-25/50 दि.:20.11.2024

सेवा मे
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(वित्त एवं संचार)
दिल्ली- 110054

महोदय,

विषय: हिन्दी पत्रिका "यमुनातीरे" पर अभिमत

आपके कार्यालय की हिन्दी ई-पत्रिका यमुनातीरे का 12 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। तदर्थ सादर धन्यवाद। राजभाषा हिन्दी के विकास यात्रा में पत्रिका के माध्यम से एक जन की भावना एवं विचारों को शब्दों की माला में पिरोकर अन्य जनों तक पहुचाने का प्रयास सच में प्रशंसनीय है। पत्रिका की साज-सज्जा एवं कलेवर भी अच्छी है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं रोचक एवं मर्मस्पर्शी है। विशेषकर किसान अन्नदाता या भाग्यविधाता, जल संरक्षण: नवीन विचार एवं पहल एवं प्रायः सभी कविताएं अत्यंत रोचक हैं। कार्यालय के विभिन्न गतिविधियों व कार्यक्रमों से संबंधित छायाचित्रों, चित्रकलाओं का प्रस्तुतीकरण भी अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य और निरंतर प्रगति की कामना के साथ पत्रिका के कुशल संपादन एवं प्रकाशन के लिए संपादन मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

सधन्यवाद!

भवदीया,
हस्ता/-
षिबी टी. मांजूरान
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय प्र. मले. (लेप-I), तमिलनाडु

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज-211001

REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001

पत्रांक- क्षे.क्ष.नि.ज्ञा.सं.(प्र.)/पत्रिका पावती(132)/2024-25/ 358 दिनांक : 07.11.2024

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
कार्यालय- महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित एवं संचार)
दिल्ली

विषय:- हिंदी पत्रिका 'यमुनातीरे' के 12वें अंक की पावती।

संदर्भ:- ईमेल से प्राप्त पत्र दिनांक 29.10.2024

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'यमुनातीरे' के 12वें अंक की प्राप्ति हुई। इसके लिए सादर धन्यवाद ।

पत्रिका का कलेवर आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं प्रशंसनीय हैं। विशेषकर **'भार', 'मेरे दो अनमोल रत्न', 'बुढ़ापा', 'जल संरक्षण: नवीन विचार एवं पहल'** एवं **'किसान अन्नदाता या भाग्य विधाता'** विशेष रूप से पठनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका में सम्मिलित कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र आकर्षक हैं।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/सलाहकार

Phone:- 0532-2423485 Fax : 0532-2423485 E-mail- rtiallahabad@cag.gov.in

---

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
चेन्नै का कार्यालय
"ऑडिट भवन", 361, अण्णा सालै, तेनाम्पेट
चेन्नै – 600018

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT
(CENTRAL), CHENNAI
'AUDIT BHAWAN', 361, ANNA SALAI,
TEYNAMPET, CHENNAI - 600018

सं मनिलेप(के) /हिंदी अनुभाग/14-02/2024-25/142 दिनांक: 07.11.2024

सेवा में
डॉ शिप्रा पाण्डे,
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित एवं संचार), दिल्ली

विषय : वार्षिक गृह पत्रिका 'यमुनातीरे' के बारहवाँ अंक पर अभिमत ।

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित 'यमुनातीरे' के बारहवाँ अंक की एक प्रति इस कार्यालय में ई-मेल के जरिए प्राप्त हुई । बहुत धनयवाद ।

पत्रिका में छपी समस्त लेख व रचनाएं स्तरीय एवं रुचिकर हैं । पत्रिका के इस सुंदर अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों एवं सपंदाक मंडल को हार्दिक बधाई । विशेषकर श्री आनंद कुमार सिंह कृत **"संस्कार"**, सुश्री गीता मेहता कृत **"डिजिटल टेक्स्ट की लोकप्रियता"**, सुश्री गीता रानी कृत **"उम्रदराज"**, सुश्री सीमा कुमारी कृत **"जल संरक्षण: नवीन विचार एवं पहल"** उत्कृष्ट है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में आपका प्रयास सराहनीय है । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,

Digitally signed by
N Sridhar

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'यमुनातीरे' के 12वें अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

Hindi Cell AE KERALA < hindicell.ker.ae@cag.gov.in >
Fri, 24 Jan 2025 12:05:19 PM +0530

To "RAJBHASHA DELHI"<rajbhasha.del.fnc@cag.gov.in>

महोदय/महोदया,

विषय: कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'यमुनातीरे' के 12वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

संदर्भ : आपके कार्यालय का ई-मेल दिनांक 01.11.2024

आपके कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका **'यमुनातीरे'** के 12वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुडे सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका **'यमुनातीरे'** की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,
ह.
हिंदी अधिकारी

Azadi Ka Amrit Mahotsav

हिन्दी ई-पत्रिका 'यमुनातीरे' के 12वें अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

MOUSUMI CHOUDHARY < mousumic.asm.au@cag.gov.in >
Mon, 10 Feb 2025 2:10:16 PM +0530

To "RAJBHASHA DELHI"<rajbhasha.del.fnc@cag.gov.in>
Cc "Deepak Joshi"<deepakj.mh3.au@cag.gov.in>

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार),
नई दिल्ली -110054

विषय: हिन्दी ई-पत्रिका 'यमुनातीरे' के 12वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार),नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित हिन्दी ई-पत्रिका 'यमुनातीरे' के 12 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएँ सराहनीय हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ भी अत्यंत मनोहर है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार विशेष बधाई का पात्र है।

'यमुनातीरे' पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित ।

भवदीया,
मौसमी चौधरी,
हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), असम

धैर्य और बुद्धिमत्ता – एक दूसरे के पूरक

श्रीमती गीता मेहता
सहायक निदेशक (राजभाषा)
केंद्रीय कार्यालय

मानव–जीवन में नाना प्रकार की समस्याएं व उतार–चढ़ाव आते रहते हैं किन्तु इनका सामना करने के लिये धैर्य व बुद्धि दोनों के अच्छे सामंजस्य की आवश्यकता होती है। यह सत्य है कि किसी भी समाधान के लिये बुद्धि का उपयोग सही समय पर करने से समाधान निकलते है किन्तु यह सही समय ही धैर्य का प्रतीक है। वास्तव में धैर्य का बुद्धि से गहरा सम्बंध होता है। धैर्य से अभिप्राय है कि किसी भी बाधा या रूकावट का सामना करने की हिम्मत और स्थिरता बनाये रखना। मनुष्य इन दोनों के सांमजस्य से अपने जीवन में बाधाओं, कठिनाइयों व जीवन की चुनौतियों का समाधान काफी हद तक सफलतापूर्वक कर लेता है।

आज के समय में डिग्री या डिपलोमा धारक पढ़े लिखों की श्रेणी में तो गिने जाते हैं किन्तु जहां तक बुद्धिमानी व समझदारी का संबंध है उसके लिये इतना ही पर्याप्त नहीं है। यहां परिभाषा का विस्तार रूप देना उचित होगा। ऐसा व्यक्ति जिसमें सीखने की क्षमता, तार्किक सोच व अपने आसपास के वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने की कला हो बुद्धिमता की श्रेणी में आता है। हम जिस समाज व परिवेश में रहते हैं उसे समझने व सही निर्णय लेने में ही हमारी योग्यता का पता चलता है।

ध्यातव्य है कि विपत्तियां हमारे पुरूषार्थ व विवेक को चुनौती देती हैं और इन चुनौतियों का सामना करने के लिये धैर्य एक मित्र की भांति अपनी भूमिका अदा करता है।

पौराणिक कथाओं से लेकर हमारे आधुनिक युग तक इतिहास धैर्य और बुद्धिमता की गाथाओं से भरा पड़ा है। जब बुद्धिमान अर्जुन धैर्य खोकर रणभूमि से पलायन का इरादा करते हैं तो भगवान श्रीकृष्ण उनको धर्म का पाठ पढ़ाते हैं और साथ ही उनकी बुद्धिमता में धैर्य रूपी शक्ति का समावेश कर उनके विजय–रथ को आगे बढ़ाते हैं।

भगवान बुद्ध ने अपने धैर्य और बुद्धिमत्ता का उपयोग करते हुये कठिन तपस्या व ज्ञान का अभ्यास किया तथा वर्षो तपस्या के बाद बोध वृक्ष के नीचे ध्यान करते हुये आत्मज्ञान प्राप्त किया। वास्तव में धैर्य के बिना बुद्धिमत्ता अधूरी है और बुद्धिमत्ता के बिना धैर्य अधूरा है। निःसंदेह धैर्य और बुद्धिमत्ता ऐसे दो मित्र हैं जो एक दूसरे के पूरक है।

कभी–कभी धैर्य व बुद्धिमता में टकराव की स्थिति देखने को मिलती है। धार्मिक ग्रंथ रामचरितमानस में जब श्रीराम समुद्र तट पर खड़े होकर समुद्र से रास्ता देने के लिए अनुनय–विनय करते हैं तब समुद्र ने श्रीराम की प्रार्थना पर कोई ध्यान नहीं दिया तो श्रीराम ने क्रोधित होकर समुद्र को सुखाने का निश्चय किया। तब समुद्र प्रकट होकर क्षमा याचना करते हैं व मार्ग प्रदान करते हैं, अतः अतिशय धैर्य भी अनुचित है।

धैर्य और बुद्धिमत्ता के सही तालमेल से ही हम अपने दैनिक कार्यों के निष्पादन में निपुणता एवं समस्या समाधान में सफलता पाते हैं। हमें अपनी श्रेष्ठ स्थिति बनाने व उसे कायम रखने (सुरक्षित) रखने के लिये भी धैर्य, सहनशीलता एवं विनम्रता का चयन करना होगा क्योंकि जब किसी परिस्थिति में हमारे अंदर की चिंगारी हमारी प्रेरणाशक्ति होती है तो वहीं दूसरी ओर बाहर की चिंगारी हमारे विनाश का कारण बनती है।

भारत को अंतरिक्ष यान भेजने में प्रथम बार में सफलता नहीं प्राप्त हुई किन्तु अनवरत प्रयास व धैर्य के साथ भारत अगले प्रयास में सफल रहा।

निष्कर्ष यह है कि व्यक्ति अपनी बुद्धि का समुचित उपयोग करते हुए न केवल स्वयं के लिये अपितु उस परिवेश व समाज के लिये भी जहां वह रहता है, अच्छे वातावरण का निर्माण करता है।

मां

श्रीमती ज्योति दीक्षित
सहायक निदेशक (राजभाषा)
शाखा कार्यालय, लखनऊ

मां से जीवन, मां ही जीवन
मां से ही सब कुछ पाया है।
मां ही धरती, मां ही अम्बर
मेरी मां ही धूप और छाया है।
इस दुनिया के सब रिश्तों ने,
कभी न कभी दिल तो दुखाया है।
केवल मेरी मां ने ही हमेशा,
मुझ पर प्यार ही प्यार लुटाया है।
चाहे कुछ भी कह दूं उससे,
उसका चेहरा हमेशा मुस्कराया है।
जब भी उलझी हूं किसी उलझन में,
उसने ही मुझे सुलझाया है
वही समझती है केवल मुझको,
और न कोई मुझे समझ पाया है।
आवाज से ही जान लेती है वह,
जो उसे मैंने शब्दों में न बताया है।

न जाने किस मिट्टी की बनी है वह,
जिसमें प्यार ही प्यार समाया है।
मैं हूं बहुत ही भाग्यशाली जो,
उसे माँ के रूप में पाया है।
वह तो है मेरी वट वृक्ष और,
मेरा अस्तित्व तो उसकी छाया है।
ईश्वर देना उसे लम्बी उम्र,
उसमें ही मेरा संसार समाया है।

> हिंदी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है।
> ~'माखनलाल चतुर्वेदी'

कटुसत्य

मुकेश कुमार सक्सेना
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)
केंद्रीय कार्यालय

जीवन से यूं ही गुजरते जायेंगे।
मौत के आगोश में उत्तरते जायेंगे।।

हकीकत न भूलना, ऐ! मेरे भाई।
होगी मौत से तेरी एक दिन सगाई ।।

अच्छे कर्मों से तुम खुद को सजाना।
परहित का तुम तिलक है लगाना।।

ओढ़ वैराग्य के वस्त्र, होगे जब तुम खड़े।
हाथ यमराज के रह जायेंगे बढ़े के बढ़े।।

मौत से मिलने को जो आकुल हो गये।
जिनके प्राण शरीर छोड़ने को व्याकुल हो गये।।

मौत उनका नहीं बिगाड़ सकती कभी।
जीवन नहीं उनके लिए एक पहेली कभी।।

आओ अब एक मृत्यु गीत बनायें।
मरणोपरांत की कहानी लोगों को समझायें।।

जब तक मृत्यु को हम छिपाते जायेंगे।
जीवन को अबूझ हम बनाते जायेंगे।।

भ्रष्टता रोकनी है पढ़ाओ मृत्यु को।
खड़ी तेरे पीछे समझाओ इस तथ्य को।।

लोगो में होगी जब यह भावना प्रबल।
सदा रहेगा उनमें इमानदारी का बल।।

कुछ भी तो नहीं ले जा सकते इस जहाँ से।
सिवाय सुकर्मों के कुछ भी न जाता यहाँ से।।

फिर क्यों इतनी हम आपाधापी मचायें।
छीन दूसरे का निवाला अपने मुँह में पहुँचायें।।

परोपकार से बड़ा कोई धर्म नहीं है।
परपींड़ा से बढ़कर अधर्म नहीं है।।

इंसानियत के बीज बोयें इस जहाँ में।
हैवानियत को भेज दें अंधेरी गुफा में।।

पृथ्वी को है स्वर्ग बनाना अपने हाथ में।
आओ अब बनाये इसको सब साथ–साथ में।।

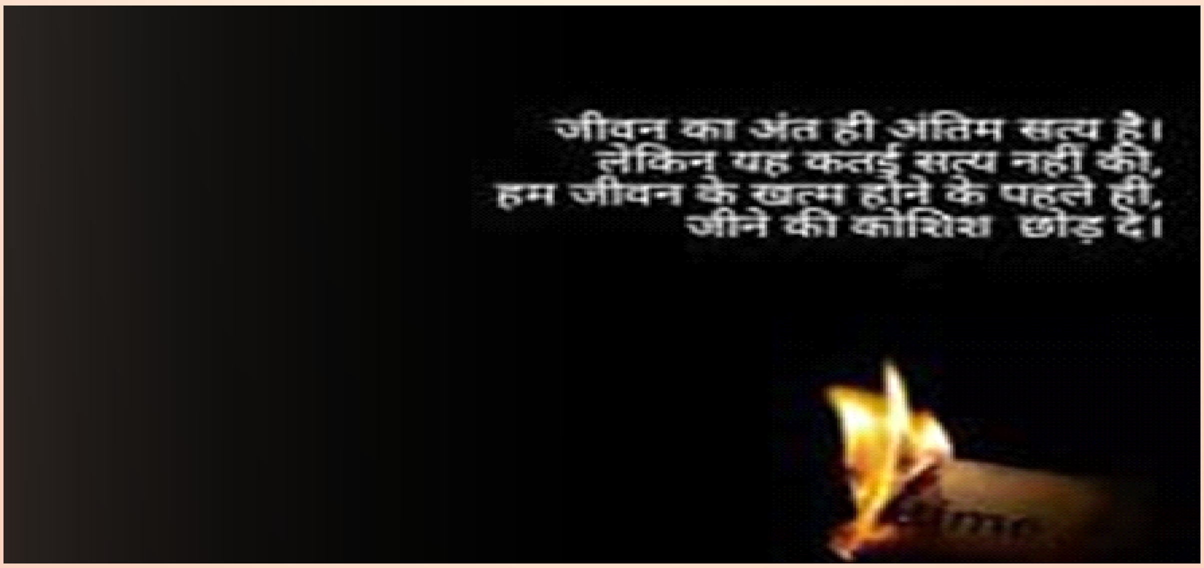

बने राम, कृष्ण, बापू, दयानन्द, हम।
अर्न्तमुखी बनकर ढूंढे परमानन्द हम।।

होंगे जब ऐसे विचार हर एक जीव में।
ईश्वर वास करेगा फिर राम–रहीम में।।

डर न होगा फिर किसी को मृत्यु आने से।
भय न होगा फिर किसी को सत्य कहने से।।

जीवन को जीवन्त बना सत्यगीत गायें हम।
मृत्यु गीत गाये हम–मृत्युगीत गायें हम।।

हिंदी भाषा वह नदी है जो साहित्य, संस्कृति और समाज को एक साथ बहा ले जाती है।

~'रामधारी सिंह दिनकर'

बनारस

पल्लवी शर्मा
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)
शाखा कार्यालय, नागपुर

काशी विश्वनाथ एक ऐसा पवित्र शहर है जहां लोग या तो भगवान शिव के दर्शन के लिए आते हैं या फिर अपने प्रियजनों को अंतिम विदाई देने के लिए। हम, अर्थात् मेरी मां, पापा और मैं, पहले कारण के लिए ही बनारस गए थे, लेकिन वहां पहुंचकर हम दूसरे कारण में भी फंस गए। हमने अपनी योजना बनाई थी उस माह के दूसरे शनिवार की छुट्टी के आधार पर, जो मेरे पापा को काम से मिलती थी, मुझे तो खैर हर शनिवार को ही छुट्टी रहती थी। लेकिन कौन जानता था कि वह दिन उस वर्ष के पितृ पक्ष के पहले दिन से मेल खा जाएगा। चारों तरफ काफी भीड़ थी। होटलों पर भी इस भारी भीड़ का दबाव था। जो भी जगह खाली थी, उसकी कीमतें दोगुनी या शायद उससे भी ज्यादा थी। हमने नहीं सोचा था कि इतनी भीड़ होगी वरना मेक माई ट्रिप से होटल बुक करके ही आते। एक घंटे तक अलग–अलग होटल में इधर–उधर घूमने के बाद, हम एक होटल में पहुंचे, जिसके निम्न स्तर के कमरे की कीमत 500–600 रुपए या ज्यादा से ज्यादा 1200–1300 रुपये होनी चाहिए थी, लेकिन हमें एक दिन के लिए 3200 रुपये चुकाने पड़े। उस कमरे में अजीब सी गंध थी तथा कोई सर्विस भी प्रदान नहीं की गई थी। फिर भी हम शांत थे, चलो कमरा तो मिल गया है। थोड़ा समय ही बिताना है।

अगली सुबह होटल वाले ने हमारे साथ एक आदमी को भेजा, जिसका उद्देश्य हमें एक पंडित के पास ले जाना था ताकि हम वीआईपी कोटा में आसानी से दर्शन कर सकें। हमने ऐसा ही किया, हालांकि मेरी मां संतुष्ट नहीं थीं क्योंकि सीधे शिवलिंग पर जल और पुष्प अर्पित नहीं किए जा रहे थे, बल्कि एक अरघे के द्वारा जलाभिषेक हो रहा था, तो मां के लिए यह स्वीकार्य नहीं था। लेकिन फिर, कोई दूसरा तरीका भी नहीं था कि सीधे शिवलिंग तक पहुंचा जाए, तो उन्होंने उस होटल के कमरे की तरह इसे भी ईश्वर की इच्छा मान स्वीकार किया। मैं और पापा ठीक थे।

यहां यह नहीं भूलना चाहिए कि काशी विश्वनाथ मंदिर की जो सुंदरता है, वह अब और अधिक स्वप्नलोक जैसी लगने लगी है। एक ऐसी जगह जहां आप बहुत अधिक शांति का अनुभव करते हैं। हालांकि, जो मूल संरचना थी, वह मुझे इस विस्तृत सुंदरता से कहीं अधिक आध्यात्मिक लगती थी। पुरानी सीढ़ियों से चलकर मूल गर्भगृह में निवास करने वाले शिवलिंग के दर्शन कर जो संतुष्टि मिलती थी उसको शब्दों में वर्णित नहीं किया जा सकता। परंतु नए मंदिर के चारों ओर का कलाकृति–युक्त क्षेत्र भी अभूतपूर्व है। वैसे तो यह नवीनता परिवर्तन का आभास देता है, और परिवर्तन को स्वीकार करना मुझ जैसे व्यक्ति के लिए थोड़ी टेढ़ी खीर है। परिवर्तन सब कुछ अपरिचित बना देता है। हालांकि ईश्वर कभी अपरिचित नहीं हो सकते पर उनके नए घर को फिर से अपना बनाने में शायद कुछ समय लग जाता है।

फिर हमने जो अगला कदम उठाया, वह था बनारसी साड़ियों की खरीदारी का। मेरे भाई की शादी नजदीक थी और हमारे बनारस जाने का एक उद्देश्य कुछ सुंदर बनारसी साड़ियों की खरीदारी करना भी था। हमें नहीं पता था कि हम कितनी साड़ियां खरीदेंगे, लेकिन निश्चित रूप से हमें 3–4 साड़ियां तो खरीदनी ही थी। तो, मेरी एक करीबी दोस्त के सुझाव पर, जो पास के इलाके से ही थी, खरीदारी की योजना बनाई और हम दो दुकानों (फिक्स्ड प्राइस वाली, क्योंकि हम लूटे जाने से डरते थे) में गए। हमें पहली दुकान में ही रोक लिया गया। शायद, वहां का विक्रेता बहुत आसानी से समझ गया कि हम क्या चाहते हैं उसने हमें कुछ बहुत ही सुंदर साड़ियां दिखाई, विशेष रूप से ऐसी साड़ियां जो दिल्ली या मुंबई में नहीं मिलतीं,

वह भी काफी कम मूल्यों पर, और हमने ढेर सारी साड़ियां खरीद लीं। इतनी कि हमने भाई की शादी की अधिकांश खरीदारी उन दो दुकानों में ही कर ली थी। मेरी मां के अनुसार, अब दिल्ली में कपड़ों की थोड़ी सी ही खरीदारी बाकी थी। एड्रेनलिन रश और वह एहसास कि हमारे बैग में कुछ सुंदर नई साड़ियां हैं जो कि मेरे भाई के शादी के आयोजनों में चार चांद लगाने वाली हैं, उन सभी परेशानियों की भरपाई करता था जो हमें वहां पहुंचने, होटल के उस कमरे में रहने तथा भीड़ में सहज होकर शिवलिंग के बहुत पास न जा पाने को लेकर आई थी। आप समझ सकते हैं कि हमारा मिशन कितना सफल रहा। सबसे थका देने वाले और उदासी भरे पल वह थे, जब मुझे उस शहर से और अपने माता–पिता से विदा लेनी पड़ रही थी, ताकि मैं अपने कार्यस्थल पहुंच सकूं। विवाह और नौकरी, ये दो ऐसे बंधन हैं जो आपको मां–बाप और घर से दूर करने के लिए पर्याप्त हैं। मैं भी इन्हीं बंधनों में ग्रसित रेलगाड़ी में बैठ अलग सफर को निकल पड़ी। खैर, यात्रा अद्‌भुत रही। जेबें खाली थीं, लेकिन मन संतुष्ट व खुशी से भरा हुआ था। और खुशी हमारे जीवन में एक बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती है, श्रीमान।

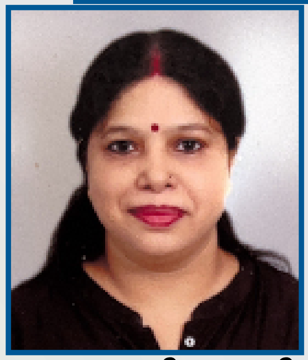

विडम्बना

गीता रानी
(वरिष्ठ निजी सचिव)
केंद्रीय कार्यालय

मेरी यह कहानी 'विडम्बना' आज के समाज में पारिवारिक हालात से संबंधित है। आज पारिवारिक स्थिति को देखकर दिल में एक टीस–सी एक चुभन–सी महसूस होती है। समाज में क्या हो रहा है, देखकर हैरानी होती है। वर्तमान स्थिति को देखकर मन यह सोचने को विवश है कि आज जो समाज में हो रहा है, क्या पूर्व में भी होता आया है। हां पहले भी घटनायें सुनी व देखी हैं, मगर बहुत अंतर आ गया है। पहले और आज में, मैं अंतर इसलिये बता रही हूं कि पहले संयुक्त परिवार होते थे। अगर परिवार में मनमुटाव होता था तो परिवार से अलग होने के लिये कई बार सोचना पड़ता था। कहने का तात्पर्य है कि जब हालात बहुत ही बदतर हो जाते थे तो अलग होने का निर्णय लिया जाता था। परन्तु आज परिस्थिति बिल्कुल सामान्य होती है मगर बच्चे फिर भी माता–पिता से अलग रहना चाहते हैं। हां, सभी बच्चे ऐसे नहीं होते परन्तु ज्यादातर अब अपना अलग निजी स्थान चाहते हैं। पहले भी एकांकी परिवार हो चुके हैं बड़े–बड़े बंगले और कोठी उसके बावजूद बच्चों को अपना अलग एकांत चाहिये। यह कहानी इसी परिवे ा को दर्शाती है।

मैं ऑफिस के लिये निकल रही थी बहुत देर इंतजार करने के बाद लिफ्ट आई। तो उसमें एक सज्जन खड़े थे जो नीचे के फ्लोर से ऊपर आये जबकि उनको नीचे जाना था खैर मैंने लिफ्ट में प्रवेश किया वह चुपचाप कोने में खड़े थे उनके हाथ में दो खाली बैग थे लगभग 70 वर्ष के आसपास उनकी आयु लग रही थी। मैंने देखा कि उनको किस फ्लोर पर जाना है उन्होंने कोई बटन नहीं दबाया हुआ था। मैंने उनको नमस्ते की और कहा कि आपको किस फ्लोर पर उतरना है उन्होंने बहुत ही सौम्यता से मुझे देखा और कहा कि ग्राउंड फ्लोर पर उतरना है मैंने जीरो का बटन दबा दिया उन्होंने झेंपते हुए कहा कि बेटा मैं भूल गया बटन दबाना मुझे भूलने की आदत हो गई है। मैंने उनको पूछा कि आप किस फ्लोर पर रहते हैं उनकी आंखों में एक चमक सी आ गई और उन्होंने बताया कि मैं 16वें फ्लोर पर रहता हूं। मेरा बेटा साथ वाले टावर में रहता है मैं वहीं खाना लेने के लिये जा रहा हूं उनकी आवाज में एक जोश एक उत्साह भर गया वह बोले मेरा बेटा बहुत ही पढ़ा–लिखा है बहुत ही अमीर है इस सोसायटी में दो–दो फ्लैट लिये हैं अभी 30 लाख की गाड़ी ली है। मैंने भी मुस्कराकर उनसे कहा कि बहुत अच्छा है तो क्या आप व आंटी जी यहां रहते हैं वह थोड़ा रुके और बोले कि आंटी तो 5 साल पहले ही मुझे छोड़कर भगवान के पास चली गई है और वे बोलते चले गये कि मेरे बेटे ने सारी सुविधाएं मुझे यहां दी हैं कोई कमी नहीं रखी मेरे लिये। मेरे अंदर तक कुछ टूटता चला गया मैं अपने आंसू रोक नहीं पा रही थी उनके चेहरे से नजर नहीं हट रही थी वह अभी भी उसी जोश में दिखे मतलब यह कि मैं सहम सी गई कि पिता कैसे होते हैं। अकेले हैं इतने बड़े फ्लैट में, दोनो समय खाना लेने जाते हैं बेटे के घर फिर भी बेटे की तारीफ करते नहीं थक रहे हैं इतने में ग्राउंड फ्लोर आ गया। लिफ्ट रुकी मगर उन्होंने लिफ्ट को रोके रखा और बोले कि बेटा आना कभी समय निकालकर मेरे घर, मैंने भी रुंधे गले से हां बोला शब्द गले में ही अटके रह गये। वह तो चले गये मगर मेरा दिमाग एकदम सुन्न हो गया था कि कैसा बेटा है जो एक पिता को अपने पास नहीं रख सकता उनको अपना एकांत चाहिये। पिता दोनो समय खुद खाना लेने जाते हैं फिर भी बेटे की तरक्की से खुश हैं कोई गिला शिकवा नहीं है। मैंने सोचा कि उनके पास एक बार तो होकर आएंगे उनकी जिंदगी के बारे में जानने आंटी के बारे में जानने की उत्सुकता थी पर सबसे ज्यादा उनके अकेले होने का जो दर्द है वह कहीं महसूस हो रहा था यही सोचते हुए मैं ऑफिस चली गई।

इस बात को दो–तीन दिन हो गये मैं भी ऑफिस व घर के काम में व्यस्त हो गयी और सप्ताह के अंत में भी कोई जरुरी कार्य आ जाने के कारण मैं उनके पास नहीं जा पायी। सोमवार के दिन मैं फिर सुबह ऑफिस के लिये निकली तो वह लिफ्ट में मिल गये आज भी वह खाना लेने जा रहे थे। मैने उनको नमस्ते किया और उनको अपने यहां आने का निमंत्रण दिया परन्तु वह बोले कि बेटा पहले तो आपको ही आना पड़ेगा मैंने भी उनको हां बोला और लिफ्ट से निकल गई।

फिर जिंदगी की आपाधापी में भूल गई कि अंकल के पास भी जाना है। एक दिन मोबाइल में सोसायटी ग्रुप पर एक मैसेज आया कि कोई बुजुर्ग हैं जो कारीडोर से सामान उठाकर ले जा रहे हैं किसी की घरेलू सहायिका की चप्पल तो किसी के न्यूज पेपर । यह देख कर अचंभा भी हुआ कि इस सोसायटी में सभी समृध्द लोग हैं फिर कौन ऐसी छोटी–मोटी चीजों की चोरी कर रहा है। इसके बाद कई वीडियो भी ग्रुप पर डाली गईं जिसमें वह सामान उठाते हुए देखे गये। वीडियो देखकर मैं चौंक गई यह वही अंकल हैं जो 16वीं मंजिल पर रहते हैं। लोगों ने आपत्ति व्यक्त की कि इनको इस टावर से निकाला जाये। उनके बेटे का भी एक माफी का मैसेज ग्रुप पर आया। कुछ दिन बाद से वह अंकल दिखाई देने बंद हो गये। मुझे बहुत ही दुख महसूस हो रहा था कि एक व्यक्ति जिसने पूरी जिंदगी मेहनत करके अपने बच्चों को इस लायक बनाया कि वह करोडों के फ्लैट, लाखों की गाड़ियां खरीद सकें वह आज छोटी–मोटी चीजें क्यों उठा रहे हैं।

बहुत बहुत सोचने के बाद भी मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसा वह क्यों कर रहे थे। मैं जब भी लिफ्ट में होती तो उनके बारे में सोचने लगती। एक बार ऐसे ही सोच रही थी कि 16वें फ्लोर से कोई लिफ्ट में चढ़ा तो मैं खुद को रोक नहीं पायी और अंकल के बारे में पूछ लिया। वे बोले कि वह बहुत ही सज्जन व्यक्ति थे पर कोई उनके साथ बोलने वाला समय व्यतीत करने वाला नहीं है तो इसलिये वह यह कर रहे थे कि जिससे लोगों का ध्यान उन पर जाये। मुझे बहुत ही अफसोस हुआ कि इस उम्र का एक व्यक्ति जिसने पूरा जीवन सिर उठाकर जिया अर्थात् सम्मानपूर्वक जिंदगी को वह अब अपने जीवन के अंतिम पड़ाव पर अपने अकेलेपन को खत्म करने के लिये यह कदम उठा रहा हैं।

क्या हो गया है हम सबको जो ऐसी स्थिति उत्पन्न हो रही है कि हमारे बुजुर्ग जिन्होंने अपना सर्वस्व अपने बच्चों पर लुटा दिया वही बच्चे उनको अपने पास नहीं रख पा रहे। दूर रखकर भी अगर थोड़ा समय उनके साथ बिता दें तो उनकी यह स्थिति नहीं होगी। जीवन के अंतिम पड़ाव पर वह इस तरह अपमानित तो नहीं होंगे।

खुद पर भी गुस्सा आया कि क्या थोड़ा समय हम ऐसे बुजुर्ग लोगों के लिये नहीं निकाल सकते जो अब कुछ समय के लिये और हैं हम सबके साथ। हमारा थोड़ा समय ही जायेगा पर हम उनसे उनके जीवन के वह अनुभव प्राप्त कर लेंगे जो अनमोल हैं। उनके पास थोड़ा समय बिताने का फायदा भी हमें ही होगा। उनको खुश देखकर हमें भी असीम खुशी होगी जो कि अच्छी सेहत के लिये भी आवश्यक है।

कुछ पंक्तियां जो चन्द दिन पहले ही मुझे लिखी हुई दिखीं

बड़ों की छत्रछाया हमारी
संस्कृति और संस्कार हैं

बोझ नहीं, हैं यह हमारा
सुरक्षा कवच (आशीर्वाद)है।

महिला दिवस की सार्थकता

नन्दिनी दत्ता राय
(सहायक पर्यवेक्षक)
केंद्रीय कार्यालय

अभी कुछ दिन पहले ही हम सभी ने अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। महिलाओं के बारे में काफी कुछ लिखा गया। बहुत जगह महिलाओं को विशेष छूट का लाभ मिला, कहीं–कहीं तो उनको निःशुल्क सुविधायें प्राप्त हुई। जगह–जगह सभाएं आयोजित की गयी जहाँ महिलाओं की उप्लब्धियों के बारे में बताया गया।

वास्तव में एक उल्लास का माहौल बन गया। मुझे स्वयं पर गर्व होने लगा कि मैं एक महिला हूं।

परन्तु अगले ही पल मन में अनेकों प्रश्न आए। महिला दिवस के अवसर पर महिलाओं की शक्ति एवं संवेदना का उल्लेख जिस प्रकार होता है या किया जाता है, क्या वाकई हमारे रोज की जिन्दगी में महिलाओं को वह सम्मान प्राप्त है जिसकी वे हकदार हैं। इतने वर्षों से महिलाओं का समाज में बहुत योगदान रहा एवं महिलाओं ने विविध क्षेत्रों में कामयाबी भी हासिल की, परन्तु इन ऊचाइयों को प्राप्त करने में, आत्मनिर्भर बनने में तथा अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये महिलाओं को नाना प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, वे स्वयं को सुरक्षित महसूस नहीं करती, कभी–कभी वे भीषण प्रताड़ना का शिकार भी होती हैं।

यहां यह कहना अनुचित न होगा कि समाज नारी एवं पुरुष दोनों से है, एवं दोनो के रचनात्मक योगदान से ही एक श्रेष्ठ एवं समृद्ध समाज की सृष्टी होती है। हमारे पौराणिक कथा द्वारा यह सिद्ध है कि अर्धनारीश्वर स्वरूप में शिव के आधे हिस्से में पुरुष रूपी शिव का वास है एवं आधे हिस्से में. स्त्री रूपी शक्ति का वास है। पुरुष और स्त्री एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। ब्रह्माण्ड के अस्तित्व के लिये स्त्री एवं पुरुष का समान महत्व है एवं दोनों ही एक दूसरे की शक्ति के बिना अधूरे हैं। महिलाओं के लिये सोचना समाज का मौलिक कर्तव्य है, परन्तु खेद है कि इस विषय में संवेदना से कोई नहीं विचार करता है।

मेरा विचार है कि महिलाओं का सही अर्थ में सशक्तिकरण तभी होगा जब हमारे समाज का पुरुषवर्ग संवेदनशील होगा। पुरुषों को बचपन से ही एसे संस्कार दिये जाने चाहिये कि वह नारी का सम्मान करे, न कि उसे प्रताड़ना दें। समाज का भी दायित्व होना चाहिये कि वह ऐसे पुरूष जो नारी की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करते हैं या कुदृष्टि रखते हैं उन्हें हेय दृष्टि से देखा जाये व सामाजिक बहिष्कार किया जाये। प्रत्येक मां को चाहिये कि वह अपने बेटे को यह शिक्षा दे कि नारी का सम्मान उनके अपने उत्थान के लिये अनिवार्य है। पिता को भी अपने परिवार में अपने बच्चों को बाल्यावस्था में ही सम्मान एवं संस्कार सिखाने चाहिये। जब समाज का प्रत्येक वर्ग अपने तरीके से एक दूसरे के साथ सम्मान से पेश आयेगा तो महिलाओं को उनका सम्मान स्वयं ही प्राप्त होगा।

महिलायें अपने को सुरक्षित महसूस करेंगी एवं उन्हें हर पल भय का सामना नहीं करना पड़ेगा तभी महिला दिवस का मनाना सार्थक है। जहां महिलायें असुरक्षित हैं, वहां महिलाओं की शक्तियों का उल्लेख करना कहां तक उचित है।

समाज में सही मायने में महिला दिवस तभी मनेगा जब समाज का प्रत्येक पुरुष नारी का सम्मान करेगा। जहां बहुओं को घर में दहेज के लिये प्रताड़ित नहीं किया जाये, महिलाओं को वित्तीय निर्णय लेने का अधिकार हो तथा अपने घर में वह स्वछन्द रूप से रह सके। उन्हें अपने घर के फैसले

लेने का अधिकार मिले तभी सही मायने में महिला दिवस सार्थक होगा।

महिलाओं को वित्तीय एवं भावनात्मक स्वाधीनता प्राप्त हो, तभी महिलाओं का सही मायने में सशक्तिकरण होगा। समाज में वह स्वैच्छिक रूप से कहीं भी आ जा सके। समाज में उनको स्नेह व सम्मान का स्थान देते हुये उनके वजूद का मान रखें, एवं कभी भी कहीं भी अपमान न हो। तभी महिला दिवस सार्थक है।

महिलाओं का भी यह दायित्व है कि वह समाज को सृजनात्मक दिशा दे। महिलायें अपने अधिकारों का अनुचित प्रयोग न करें तथा संयम एवं स्नेह का व्यवहार बनाये रखें, जिससे स्वस्थ समाज का निर्माण हो सके।

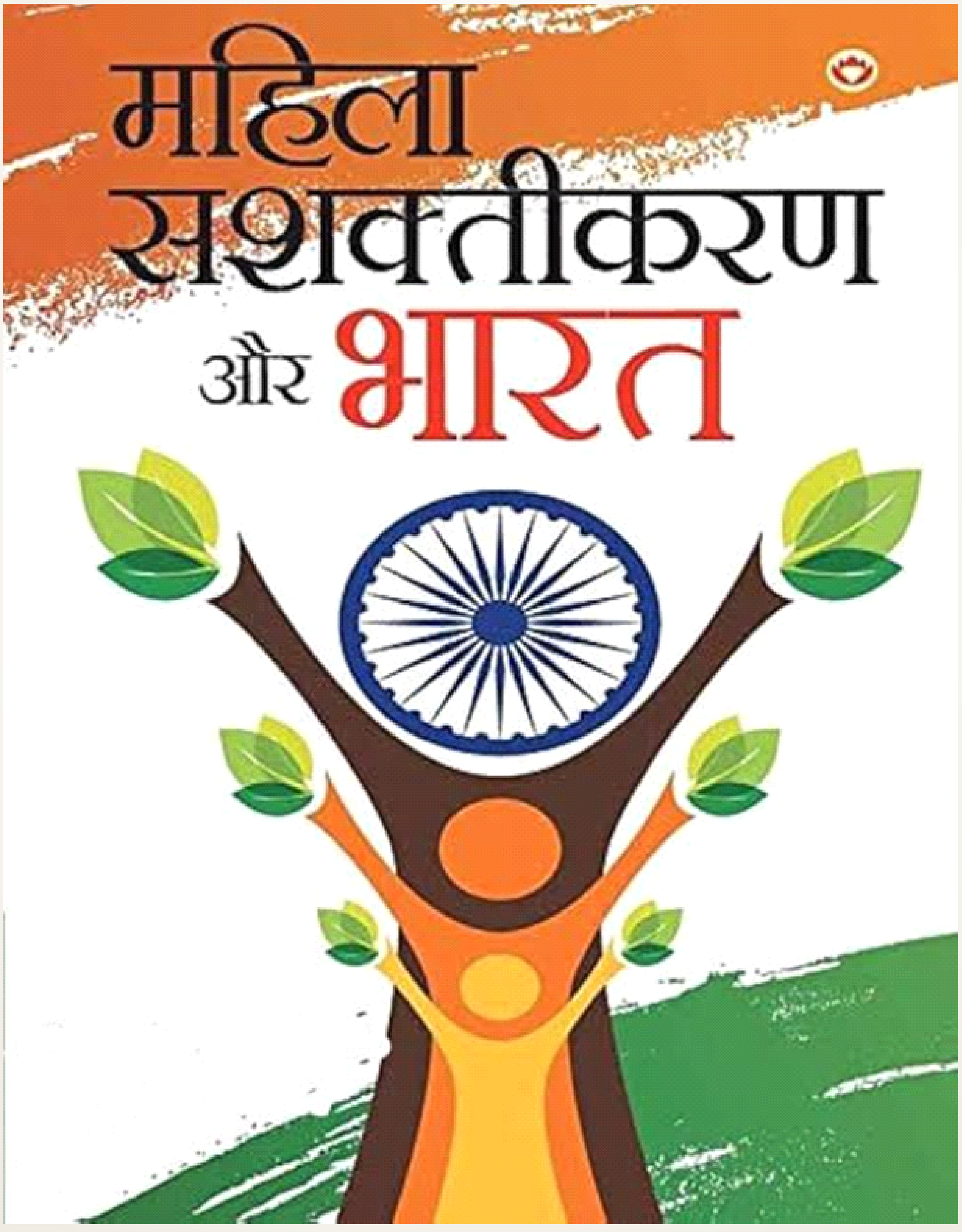

नौकरी और मेरा संसार

अरुण कुमार
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)
शाखा कार्यालय, बेंगलुरु

तेरे चक्कर में टूटे सपने
टूटे दिल हैं कितने सारे
तब लगता था बस मिल जाए एक बार
मैं सब जोड़ लूंगा,
खुशियां क्या चीज है
आसमान से चांद तारे भी तोड़ लूंगा।

क्या पता था, जहां हुआ बड़ा जहां मिला प्यार
वह परिवार भी छोड़ दूंगा,
अपने भूखे रहने की चिंता, वह ममता की गोद व
प्यार दुलार से भरा आंचल भी छोड़ दूंगा
क्या पता था, वह गांव की गलियां, खेतों की खुशबू
चौपाल की मस्ती और बड़ों का प्यार भी छोड़ दूंगा,
क्रिकेट का मैदान, दोस्तों का फालतू का ज्ञान
एक दूसरे पर लुटाना जान भी छोड़ दूंगा।

क्या पता था जिसका करता था इंतजार बेसब्री से
वह होली का त्योहार भी छोड़ दूंगा,
बहन का प्यार, भाई का दुलार
कलाई में राखी का इंतजार भी छोड़ दूंगा।
क्या पता था ए– नौकरी तेरे चक्कर में
मैं अपना छोटा सा संसार भी छोड़ दूंगा।

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा हो जाता है। हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो पूरे देश को एक सूत्र में बांधने की क्षमता रखती है।

~'महात्मा गांधी'

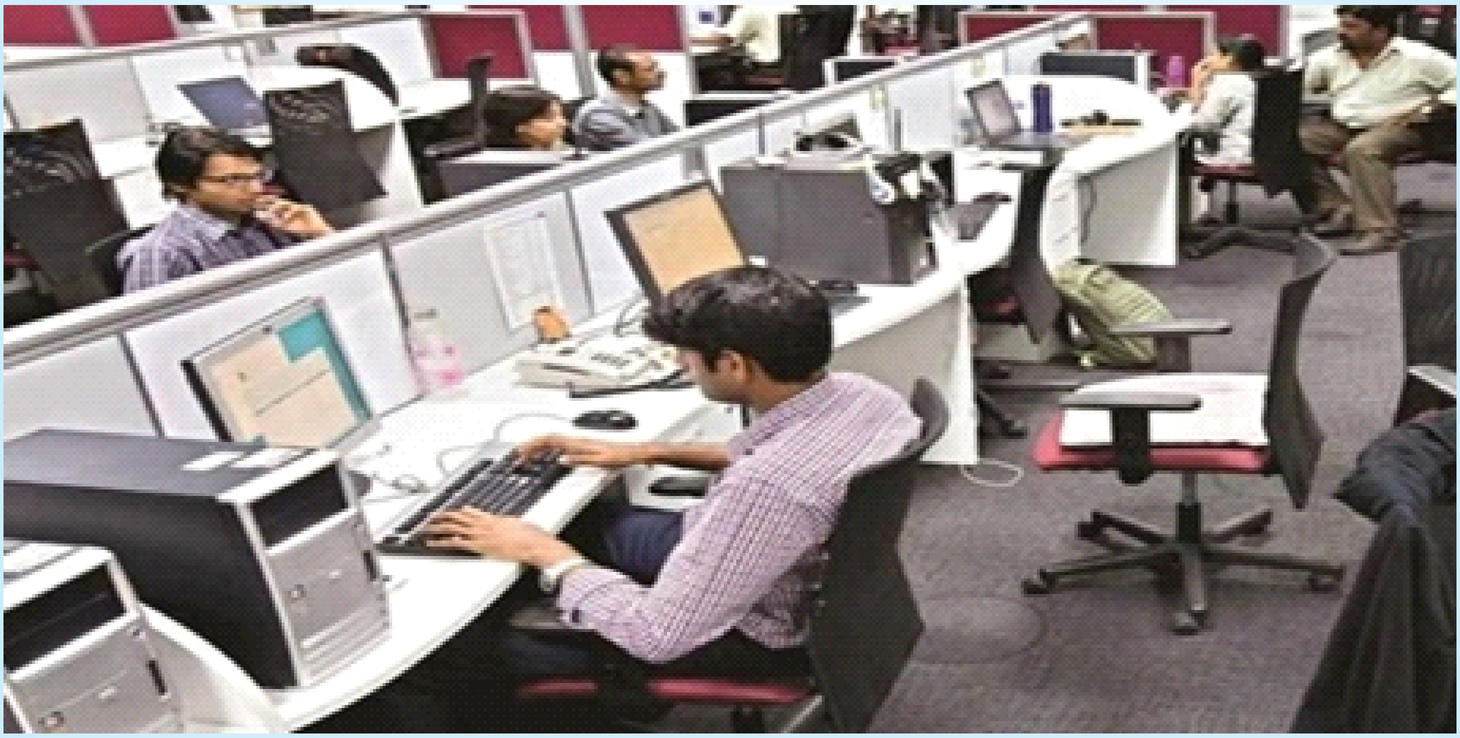

बीज का महत्त्व

आशुतोष कुमार श्रीवास्तव
(वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)
शाखा कार्यालय, लखनऊ

सृष्टि में एक छोटा सा बीज अत्यंत शक्तिशाली होता है। इसमें पूरा वृक्ष समाया रहता है। बीज हमें परोपकार को लिए सर्वस्व अर्पण की शिक्षा भी देता है। प्रकृति के तत्वों से मिलकर बीज की प्रकृति भी बदलती है। सर्वप्रथम यह अनाज के रूप में हमारा पोषण करता है। यदि इसको भूनकर इसकी उत्पादक शक्ति को समाप्त कर दिया जाता है तो भी यह और पौष्टिक होकर हमारे शरीर का पोषण करता है। इसे भिगो दिया जाए तो यह अंकुरित होकर भी हमको लाभ देता है। इससे उत्पन्न खरपतवार पशुओं के भोजन के काम आता है। जब यह पौधा बन जाता है तो इसकी पत्तियां और डंठल औषधि और मसाले के रूप में काम आती हैं। धीरे–धीरे वृक्ष बनने पर इसकी छाल, इसकी पत्तियां, इसकी जड़ें पशुओं और मनुष्यों के जीवन के लिए अत्यंत काम आती हैं।जब यह फल बनता है तो भी हमको पोषण देता है। फल रस के रूप में हमारी प्यास बुझाता है। इससे उत्पन्न सब्जियां भोजन के रूप में हमारे पोषण के साथ–साथ हमारी उदर पूर्ति भी करती हैं।

बूढ़ा होने पर वृक्ष की लकड़ी जलावन और फर्नीचर के रूप में काम आती है। जल जाने पर यह कोयला बनकर काम आता है। कोयला जल जाने पर राख के रूप में खाद के काम आता है अर्थात् जल जाने पर भी जनसेवा।

वृक्ष हमें न केवल शीतल छाया देते हैं अपितु प्राणवायु भी देते हैं। बहुत वर्ष पूर्व तमिलनाडु के एक जनपद में (शायद नागरकोइल) एक जिलाधिकारी ने पूरे जिले में तीन करोड़ वृक्ष लगवाए तो वहां का औसत तापमान 5 डिग्री सेल्सियस नीचे आ गया था। बांज के वृक्ष जहां होते हैं वहां का औसत तापमान काफी नीचे आ जाता है।

इतना ही नहीं, वृक्षों के एक विशेष गुण से लोग कम परिचित होते हैं। वर्षा ऋतु में एक–एक वृक्ष दस–दस हजार लीटर तक जल सोख लेते हैं और वर्ष पर्यन्त भूजल और नदियों को रिचार्ज करते रहते हैं। नर्मदा सहित सैकड़ों नदियां ऐसी हैं जो वृक्षों से ही रिचार्ज होती रहती हैं। भारत ही नहीं विश्व के अनेक महानगरों से भूजल समाप्त होने का मात्र एक कारण है और वह है वृक्षों का अंधाधुंध कटाव। गुड़गांव, बंगलुरु, जोहान्सबर्ग आदि नगर इसी समस्या से पीड़ित हैं।

यदि पूरे भारत और विश्व के लोग बीज शक्ति को पहचान लें और उनको कूड़े में डालकर नष्ट करने के स्थान पर उचित स्थान पर फेंक दिया करें तो वर्षा होने पर वे स्वतः फलीभूत हो जायेंगे। यदि भारत में 1500 करोड़ नए छायादार वृक्ष लग जाए तो निम्नलिखित लाभ होंगे।

1. औसत तापमान 10 डिग्री सेल्सियस तक नीचे आ जायेगा ।
2. एयर कंडीशनर और रेफ्रिजरेटर की खपत कम हो जाएगी ।
3. विद्युत् का उत्पादन अधिक और खपत कम हो जाएगी ।
4. प्रचुर मात्रा में प्राणवायु (ऑक्सीजन) और फल उपलब्ध होने से सबका पोषण और स्वास्थ्य उत्तम हो जायेंगे।
5. हरियाली होने से वर्षा अधिक होगी तो कृषि अच्छी होगी। इससे किसान की क्रय शक्ति बढ़ जाएगी और व्यापार बढ़ेगा इसके कारण सरकार की आय बढ़ेगी और कर्मचारियों की वेतन वृद्धि भी अधिक होगी अर्थात एक बीज में स्वास्थ्य से लेकर विश्व की अर्थव्यवस्था तक के बीज छुपे होते हैं।

यदि हम चाहें तो
बीज का परम चरम उपयोग भी कर सकते हैं
और लघुता में भी सर्वस्वार्पण करके
परोपकार का महती गुण सीख सकते हैं
और उसको अपने जीवन में भी उतार सकते हैं।

दैनिक यात्री

मोहम्मद इमरान खान
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)
शाखा कार्यालय, लखनऊ

आइये, आपको एक ऐसे अद्भुत संसार में लेकर चलते हैं, जहाँ हर दिन एक नया रोमांच और संघर्ष है – हां, हम बात कर रहे हैं दैनिक यात्री की! उनके जीवन में कुछ खास बात है, जिसे शब्दों में पिरोकर आपको समझाना थोड़ा मुश्किल सा लगता है। लेकिन कोशिश करता हूं, तो चलिए, जानते हैं एक ऐसे व्यक्ति का दिन, जो रोज अपनी जिंदगी को ट्रेनों की धड़कन में जीता है!

सुबह का समय होता है और रेलवे स्टेशन पर लोग एक अजीब सी दौड़ में शामिल हो जाते हैं। ट्रेन जैसे ही प्लेटफार्म पर आती है, सब लोग दौड़ने लगते हैं, ऐसा लगता है जैसे किसी बड़े खेल में भाग लिया हो, और वहां जीतने वाला ही सबसे ज्यादा स्मार्ट या फिट समझा जाए! ट्रेनों में चढ़ाई करना तो जैसे "Survival Game" हो गया हो, जहां हर यात्री अपना "Best Push" लगाने की कोशिश करता है। सबका यही मकसद होता है – एक बार ट्रेन में चढ़ने के बाद अगला लेवल सीट हथियाने का होता है,अगर यह लेवल भी पार हो जाए तो ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे यात्री ने गोल्डन सीट को पा लिया है और जितनी मुश्किल से जगह मिलती है, उतनी ही अहमियत वह सीट पाने वाले के चेहरे पर होती है।

जो लोग सीट से वंचित रह जाते हैं, वे नजरें घुमा रहे होते हैं, जैसे मानो जिनके पास सीट है, वो कोई "बड़ी उपलब्धि" हासिल कर चुका हो और फिर उन्हें मजबूरी में मुस्कराते हुए कहते हुए सुनते हैं, "अरे वाह! आपको सीट मिल गई, क्या बात है!"

अब ट्रेन के अंदर आने के बाद एक नया कारवां शुरू होता है – ताश का खेल! जी हां, ये वही लोग होते हैं जिनके पास हर दिन कोई न कोई नया मजेदार प्लान होता है। पहले बैग से ताश की गड्डी निकालते हैं, फिर एक कपड़ा बिछाकर खेल शुरू! कुछ लोग तो इस खेल में इतने मगन होते हैं, जैसे वे "world champions" हों। दूसरी तरफ, कुछ लोग अपने मोबाइल में व्यस्त होते हैं – कोइ WhatsApp पर चैट कर रहा होता है, तो कोई अपनी ऑनलाइन गेम्स में खोया होता है।

आखिरकार, जो न ताश खेलते हैं और न गेम खेलते हैं, वे अपने "Daily Gossips" में जुट जाते हैं। "क्या चल रहा है ऑफिस में?" की चर्चाएं शुरू होती हैं, और ऐसा लगता है जैसे किसी बड़े–प्यारे Podcast का हिस्सा बन गए हों। कुछ लोग अपनी कहानियों में इतने मग्न होते हैं, कि पूरी ट्रेन के सफर को एक सिनेमा शो बना डालते हैं।

अगर कभी ट्रेन बीच रास्ते में बिना सिग्नल के रुक जाए, तो समझिए चर्चा के लिए एक नया मुद्दा मिल गया। "आगे वाली ट्रेन निकली या नहीं?", "वह वाली ट्रेन क्रॉस करेगी क्या?" और फिर एक नयी दिशा की ओर बढ़ते हुए, "अच्छा, तब तक सामने वाले पेड़ से आम तोड़ लाते हैं!" – समय का इस से

बेहतर सदुपयोग और कौन कर सकता है?

जैसे ही ट्रेन चलना शुरू होती है, रास्ते में स्टेशन आने पर चाय और समोसे का दौर शुरू होता है। अब, चाय और समोसे का स्वाद अपनी जगह, लेकिन भुगतान का तरीका और भी दिलचस्प होता है। ताश के खेल में जो हार जाता है, वही चाय और समोसे के रुपयों का भुगतान करता है! और जी हां, यह अनौपचारिक "मैच" कभी भी चुनौतीपूर्ण हो सकता है, क्योंकि जीतने वाले का चेहरा अलग ही चमकता है!

अब जब अंतिम स्टेशन आता है, तो जैसे "वह आखिरी क्षण" हो! सभी यात्री जैसे "एक दूसरे को धक्का देकर" ट्रेन से उतरने लगते हैं, और ऐसा लगता है जैसे किसी ने "खजाना" जीत लिया हो। अब सब अपनी मंजिल की ओर भाग रहे होते हैं – कोई ऑफिस, तो कोई कॉलेज और किसी का तो बस यही लक्ष्य होता है कि अब घर तक कैसे जल्दी पहुंचा जाए! इस तरह से हर दिन एक नया कॉमेडी शो या कभी ट्रैजेडी का हिस्सा बन जाता है। पर इन यात्रियों के लिए, हर यात्रा एक नया एडवेंचर है, जहां हर स्टेशन एक नई कहानी लिखता है। किसी दिन ताश का खेल होता है, तो किसी दिन चाय और समोसे की चर्चा – पर यह सफर हमेशा यादगार होता है और यही है दैनिक यात्री की असली जिन्दगी!

गंगोत्री धाम एवं गौमुख यात्रा

विकास सैनी
(कनिष्ठ हिंदी अनुवादक)
केंद्रीय कार्यालय

वैसे तो उत्तराखण्ड को 'देवभूमि' अर्थात देवताओं की भूमि कहा जाता है। इसका प्रमुख कारण वहां पर स्थित हजारों की संख्या में मंदिर तथा वहां के लोगों की आस्था है परन्तु इन सबसे बहुत ऊपर स्थान रखते हैं उत्तराखण्ड के चार धाम और जून से अक्तूबर तक चलने वाली चार धाम यात्रा। इस यात्रा में दिखता है आस्था, विश्वास, भक्ति और श्रद्धा का अनूठा संगम जो इस यात्रा को पावन और पवित्र बनाता है।

इस वर्ष मुझे उत्तराखण्ड की देवभूमि पर फिर से जाने का अवसर प्राप्त हुआ और मैं चार धाम में से एक गंगोत्री धाम के दर्शन करने निकल पड़ा। चूंकि हम जुलाई के शुरू में गए थे तो बारिश तो होनी ही थी इसलिए हम बारिश का लुत्फ लेते हुए रात को दिल्ली से हरिद्वार तक गए और वहां से सुबह आगे गंगोत्री के लिए निकल पड़े। रात को 10 बजे गंगोत्री धाम पहुंचने के बाद हमने होटल में कमरा लेकर खाना खाया तथा दिनभर की थकान के बाद हम सो गए।

गंगोत्री तो हम पहुंच चुके थे परन्तु हमें आगे गौमुख तक पहाड़ों से पैदल यात्रा करते हुए गंगा मैया के उद्गम स्थल तक पहुंचना था। परन्तु उसका पंजीकरण शाम को 5 से 7 बजे तक और सुबह 8 से 10 बजे तक होता है। हम रात को पहुंचे थे तो हमने सुबह 8 बजे पंजीकरण कराया तथा 9 बजे हम तैयार होकर भोजन करके इस 18 कि.मी. लम्बी यात्रा के लिए निकल गए।

यात्रा के शुरू में ऊर्जा बहुत अधिक थी और मनोरम एवं सुंदर दृश्य इस ऊर्जा को और बढ़ा रहे थे। एक तरफ पहाड़ तथा दूसरी तरफ घाटी में मधुर ध्वनि के साथ बहती हुई भागीरथी नदी इस सफर को संगीतमयी एवं आनन्दमयी बना रही थी। रास्ते में हमने कई बार नदी को पार किया तथा दूसरी तरफ गए।

इस पूरे सफर के दौरान हमने रास्ते में आने वाले झरनों से पानी भरा और उससे ही अपनी प्यास बुझाई। 7 कि० मी० चलने के बाद हम चीड़वासा में रुके। वहां पर विश्राम स्थल बना था तथा एक दुकान पर खाने–पीने का सामान मिल रहा था। हमने वहां जलपान किया तथा आधे घण्टे के विश्राम के बाद पुनः अपने सफर पर निकल पड़े।

यहां से रास्ता थोड़ा कठिन होता जा रहा था। कहीं पथरीला रास्ता, कहीं मुश्किल चढ़ाई तो कहीं संकरा मार्ग आ रहा था। परन्तु ये कठिनाई इस सफर को अधिक उत्साही बना रही थी।

इसी उत्साह के साथ हम अगले पड़ाव भोजवासा पहुंचे वहां पर 15 मिनट का विश्राम करके हम आगे बढ़े तथा यहां से 4 कि.मी. का सफर तय करने के बाद हम गौमुख के उस बिन्दु पर पहुंचे जहां से भागीरथी नदी का उद्गम हिमनद से हो रहा था। हमनें वहां से जल को भरा तथा उसमें स्नान किया। नदी का जल एकदम बर्फ जैसा ठण्डा था।

भााम के 6 बजे हमने वहाँ से वापसी की तथा वापसी में 4 किमी का सफर करके हम भोजवासा में बने लाल बाबा आश्रम में आकर रुके। वहां हमें 600 रुपये प्रति व्यक्ति रहने के लिए जगह दी गई तथा साथ में रात का भोजन और सुबह का ना ता भी दिया गया। भोजन बहुत ही स्वस्थ एवं स्वादिष्ट था। वहाँ का वातावरण बहुत ही शांत एवं सुखमय था। पूरे दिन की थकान के बाद हमें बिस्तर पर लेटते ही नींद आ गई।

हम सुबह उठे व नहाकर तैयार हुए और नाश्ता करके 9 बजे फिर से वापसी के अपने सफर पर निकल पड़े तथा करीब 3 बजे हम गंगोत्री पहुंचे और वहां आकर हमने स्नान किया तथा गंगा मैया के घाट पर दर्शन किये और उसके बाद भोजन करने के पश्चात हमने आराम किया तथा शाम को पास में ही सूर्यकुंड और पाण्डव गुफा को देखा और उसके बाद शाम को घाट पर गंगा आरती तथा उसके बाद, मंदिर में गंगा आरती में सम्मिलित हुए। रात का भोजन करने के बाद हम सो गए और अगली सुबह हम घर के लिए निकल गए।

इस तरह से यह यात्रा भक्ति, विश्वास और आस्था के साथ–साथ साहस, उत्साह, उल्लास, और सुकून की भी यात्रा रही। इस यात्रा में बहुत ही आनंद और शांति की अनुभूति प्राप्त हुई तथा अनेक लोगों से मिलना और उनके अनुभवों से अवगत होने का मौका मिला। मैं, अब बहुत जल्द ही यमुनौत्री धाम के दर्शन करने का विचार कर रहा हूं।

शादी के सात साल

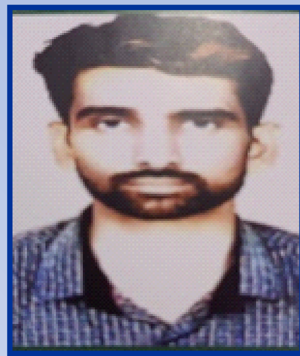

पंकज मोहन जायसवाल
(वरिष्ठ लेखापरीक्षक)
शाखा कार्यालय, लखनऊ

बात उस समय की है जब मेरी मूछें अर्धविकसित अवस्था में थी और सतत विस्तार जारी था। मुझे गुस्सा बहुत आता था। रिश्तेदारों के बीच मेरी इमेज सनकी सोल्जर वाली थी। मम्मी पापा भी मेरी इस आदत से परेशान थे और कई बार बड़े बुजुर्गों को भी मेरे द्वारा टेढ़ा और रौद्र रुप में जवाब दिए जाने की शिकायत मेरे मम्मी–पापा से की गई। जिसके कारण मम्मी–पापा को शर्मिंदा होना पड़ता था। हर तरह से समझाने के बाद भी मेरी आदत में कोई विशेष सुधार होता न देख पापा ने कई लोगों से इस समस्या को साझा किया और विचार विमर्श के बाद निष्कर्ष स्वरूप मुझे एक पंडित जी (ज्योतिषी) के पास ले गए। हालांकि मैं जाने के लिए कतई तैयार नहीं था पर पिताजी के द्वारा विनम्रतापूर्वक समझाने पर मैं चला तो गया पर गुस्सा भरा हुआ था इसलिए पंडित जी को प्रणाम भी नहीं किया। पिताजी के दो बार कहने पर मैंने पंडित जी के घुटनों पर अपनी दो उंगलियों का स्पर्श कराया।

पिताजी ने अपनी समस्या व्यक्त की तो पंडित जी मुस्कुराते हुए अपने दिव्य ज्ञान का एहसास कराते हुए बोले कि मैं तो देखते ही सब कुछ समझ गया था। उन्होंने बताया कि मेरा चंद्रमा कमजोर है जिस वजह से मन अशांत रहता है और क्रोध भी बहुत आता है। उन्होंने कनिष्ठिका (छोटी उंगली) में चांदी की अंगूठी में मोती पहनने की सलाह दी। मोती धारण करने के बाद मेरी आदत में सुधार हुआ। गुस्सा करना और किसी को उल्टा सीधा जवाब देना कम होता गया, लेकिन किसी के द्वारा गलत बात कहने पर मैं रौद्र रूप धारण कर ही लेता था। खैर वक्त गुजरा, मेरी नौकरी लग गई, गुजरते हुए वक्त के साथ मेरी शादी भी हो गई और दो बच्चे भी हो गए। पिता तो आखिर पिता होता है। एक दिन उन्होंने चिंतित भाव में अपने पास बैठाकर पूछा कि अब तुम गलत बात का भी कोई जवाब नहीं देते हो, बिल्कुल शांत रहते हो, आखिर क्या हो गया है? मानते हैं कि जिम्मेदारी और समझदारी बढ़ी है पर यह क्या हाल बना रखा है। खैर पिताजी उन्ही पंडित जी के पास लेकर हमको गए, पहुंचते ही मैंने दंडवत प्रणाम किया। पिता जी ने समस्या बताई, पंडित जी ने मुस्कुराते हुए पूछा, शादी तो हो गई न? मैंने हां में सिर हिलाया। पंडित जी ने कहा, "अरे बेवकूफ जब तुमने महारत्न धारण कर लिया है तो फिर ये उपरत्नों को पहनने की क्या जरूरत है?" मैने तत्काल मोती की अंगूठी उतार दी। खैर अब मैं ज्यादातर शांत ही रहता हूं और जवाब में "तुम्हारी ही सुन रहा हूं", "जैसा तुम्हे ठीक लगे", "जो तुम कहो", "मुझे कोई प्राब्लम नहीं" जैसे वाक्यों का ही प्रयोग करता हूं। आज ऐसे वाक्यों का प्रयोग करते हुए सात साल हो गए हैं।

मैं नदी हूं

वीणा सुधीर नाईक
(वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)
शाखा कार्यालय, बेंगलुरु

छोटी सी धारा बन,
पत्थर के सीने से,
निकल पड़ी हूं।

पहाड़ों से उतर कर,
खुशी से उछल कर
बढ़ती गयी धीरे-धीरे।

कभी ऊपर, कभी नीचे,
बहती गयी आराम से,
न सोचा जाना है कहां।

चांदनी रात में चमकती,
मुलायम धूप को सेकती,
बस चलती गयी दिन-रात।

मिल गई हसीन सहेलियां,
दोस्तों ने भी साथ दिया,
कुछ यार कच्चे पक्के हुए।
बन गयी नदी फिर महानदी,
रुकी नहीं चाहे ऋतु बदली,
और चाहे कोई कहे पगली।

महानदी की अब बस यही चाह
समा जाए उस समंदर में जहां
वापसी की राह न बचे, केवल हो मुक्ति।

जीवन के अनुभवों को अपनी चुनौतियों से
बेहतर कोई स्कूल नहीं सिखा सकता।
~ प्रेमचंद

बचपन: एक अनमोल तोहफा

विजय कुमार शर्मा
(कनिष्ठ हिंदी अनुवादक)
शाखा कार्यालय, कटक

बचपन, इसकी परिभाषा क्या है? साधारण शब्दों में हम यह कहकर इसे परिभाषित करते हैं कि बचपन जन्म से लेकर किशोरावस्था तक के समय को कहा जाता है। जिसके अंतर्गत बच्चों में कई गतिविधियों का विकास होता है, जहां उनकी चेतना में विकास, बोलचाल में निरंतर बदलाव तथा लड़खड़ाते कदम से स्कूली जीवन की शुरुआत होती है। बचपन की यादें आज भी दिल में ताजा हैं, जैसे कल की ही बात हो। किन्तु , आज आधुनिकता से भरे बचपन तथा पहले के बचपन में बहुत बदलाव आया है जिसे अनुभव करना आवश्यक है।

बचपन, जीवन का वह सुनहरा दौर है, जब हर तरफ खुशियां और मस्ती बिखरी होती हैं। न कोई चिंता, न कोई फिक्र, बस खेल–कूद और दोस्तों के साथ धमा–चौकड़ी। जहां बेझिझक, निडर होकर घर से बाहर अपने खेल जीवन को बिताते थे तथा स्कूलों में अपनी शरारती हरकतों से स्कूली जीवन का आनंद लेते थे, जहां पढ़ाई के साथ–साथ उनकी खुद की कलात्मक एवं रचनात्मक कृतियां भी होती थी। कभी शिक्षक के रहते हुये भी छिपकर कोई रचनात्मक खेल खेलना, मेज गंदा करके दोस्तों के कपड़े गंदे करने की कोशिश करना तो कभी सामने बैठे दोस्तों के कपड़े के पीछे कलम की स्याही जानबूझकर लगाना। इस तरह की कुछ अनगिनत बचपन की कहानिया हैं जिसे हम अपनी यादों की तिजोरी में हमेशा समेटकर रखना चाहते हैं पर उन यादों को समेटने के लिए भी उस बचपन का होना जरूरी है जिससे वह ऐसी यादें बना पाये। किन्तु न जाने वह बचपन कहा खो गया अब न मैदानों में वह शोर सुनाई देता है और न ही हाथों में पतंग की वह डोर दिखाई देती है। अब जिसे देखो गेजेट्स एवं इंटरनेट के मायारूपी जाल में फंसा हुआ है जिसके चंगुल में वह इस तरह फंस चुका है कि उससे उसका दूर जाता हुआ बचपन भी दिखाई नहीं देता। जहां पहले हम बेझिझक बाहर किसी भी सम–विषम परिस्थितियों में खेलने दौड़ जाते थे, दोस्तों के घर में आकर बुलाने का तथा तेज बारिश की बौछार के उस कीचड़ में कपड़े गंदे कर खेलने का इंतजार रहता था तो वहीं गिल्ली डंडा, क्रिकेट तथा बारिश में कागज की नाव चलाने जैसे खेलों के लिए सही मौसम का इंतजार रहता था। किन्तु वर्तमान पीढ़ी के बच्चे अपने असीमित उपकरणों के बीच सीमित हो गए हैं जिसके कारण उनका प्राकृतिक सुंदरता एवं खेलों के प्रति कोई लगाव नहीं रह गया। उनके अभिभावक उनके बाहर न जाने के लिए तरह–तरह की बातों से उन्हे भयभीत करते हैं, कभी प्रदूषण, कभी कीचड़ तो कभी बीमारियों का नाम सुनाकर उन्हें घर की चारदीवारी के बीच रखते हैं, जिसके परिणामस्वरूप यह देखा जाता है कि पहले की तुलना में इस पीढ़ी के बच्चे ज्यादा बीमार होते हैं और अल्पायु में ही इनकी आंखों पर चश्मे की पहरेदारी होती है। आखिर ऐसा क्यूं ? क्योंकि उस वक्त एक मां बच्चे को जन्म देती थी तो वहीं दूसरी मां अर्थात् प्रकृति अपनी छत्र छाया में उनकी पालन पोषण करती थी। प्रकृति भी उनके साथ उनके बाल क्रीड़ा में लीन रहती थी, कभी पेड़ के पीछे उन्हें छिपाती थी तो कभी खुद को झूला बनाकर अपनी गोद में उन्हें झुलाती थी। किन्तु आज की पीढ़ी को दिन प्रतिदिन प्राकृतिक स्त्रोतों से दूर किया जा रहा है और यही कारण है कि अपने बच्चे को खुद से दूर जाते देख प्रकृति भी मुरझाने लगी है एवं धीरे–धीरे प्रकृति की वह सुंदरता भी खत्म हो रही है जो उन बच्चों के साथ झलकती थी। आज की पीढ़ी को हर बात पर केवल गेजेट्स का लोभ दिया जा रहा है।

एक वह समय था जब मां कहती थी कि स्कूल न जाने पर बाहर खेलने नहीं दिया जाएगा और उस खेल के

लोभ में मां की कही गयी बातों को मानना पड़ता था और एक यह समय है जहां बच्चों को तरह तरह के गेजेट्स का लोभ दिखाकर उन्हें खाने या पढ़ने का डर दिखाया जाता है। यही कारण है कि उनमें अब उन खेलों के प्रति कोई जागरूकता नहीं रह गयी है तथा अल्पायु में ही परिपक्वता देखने को मिल रही है जिसे देख यह आभास होता है कि उनके अंदर वह बचपना अब नहीं रह गया अथवा वह बचपन अब कहीं खो गया।

बचपन, जीवन का वह सुनहरा दौर है जब सपने बड़े होते हैं और हर पल में एक नया रोमांच होता है। यह वह समय होता है जब हर मुश्किल में हम एक जादू ढूंढते हैं। जीवन का सबसे अहम एवं सुंदर दौर बचपन ही है जो हम सभी के दिलों में जीवन पर्यन्त अपनी महत्ता को बनाये रखता है तथा अपनी यादों के साथ हमें सदैव बांधे रखता है जो किसी न किसी रूप में बाहर आ जाती है, जिसकी यादें अक्सर भावनाओं से जुड़ी होती हैं। ऐसी घटनाएं जो तीव्र भावनाएं उत्पन्न करती हैं, उन्हें याद किए जाने की संभावना अधिक होती है। उदाहरणस्वरूप, जन्मदिन की पार्टी का उत्साह या सोते समय दादी–नानी की आरामदायक कहानी अविस्मरणीय यादें बन जाती है। जिस प्रकार हमें स्कूल जाने एवं बाहर खेलने का इंतजार रहता था उसी प्रकार घर के सामने घंटी की ट्रिंग–ट्रिंग की आवाज के साथ रंग बिरंगी मिठाइयां तथा बर्फ के गोले लाने वाले भैया का इंतजार रहता था तो कभी घुंघरू की झनझनाहट के साथ उस खिलौने वाले का। परंतु आज न अब वह उत्साह है और न ही दादी–नानी की कहानी के प्रति वह प्रेम, उत्साह वह खुशी जो अलौकिक एवं अमूल्य थी वह अब अदृश्य हो चुकी है।

यह सत्य है कि बचपन एक प्राकृतिक घटना न होकर समाज की रचना है। खेल के माध्यम से बच्चे बहुत ही कम उम्र में अपने आस–पास की दुनिया के संपर्क में आते हैं तथा किसी भी चीज से निडर रहते हैं किन्तु अब वह शिल्पकार नहीं और यही कारण है कि समाज एवं प्रकृति में भी अब वह सौन्दर्य नहीं है।

——————————एक अविस्मरणीय स्मृति——————————

खुली आंखों से देखा है एक सपना

आनंद राघव मिश्र
(लेखापरीक्षक)
शाखा कार्यालय, कटक

अनंत रोशनी के बीच,
क्यों धुंधली है राह?
राह– जो जाती है
उस पार, हां, उस पार–
जहां छिपा है
जीवन का
सार,
क्यों ओझल है?
राह पर बने पुल के नीचे बहता
निर्झर?
निर्झर वह कैसा?
जिसका स्रोत ब्रह्म है–
किन्तु है सबके लिए
सीमित। नहीं बना
सकता कोई भी, इस
नदी पर बांध,

सवाल है क्यों?
क्योंकि स्वयं 'काल' भी,
पीता है इसी घाट का
पानी;
अनगिनत मुश्किलें और भी
हैं, इसी राह पर,
जो हो रही प्रकीर्णित,
जीवन की अनंत रोशनी में बिखरे अंधकार के कणों
द्वारा;
खुली आंखों से देखा है एक सपना,
सबकी आंखों पर हो एक
चश्मा, चश्मा वो कैसा?
छांट सके जो अंधकार के इन कणों
को, और रोक सके इस प्रकीर्णन
को;
क्योंकि, इस राह की शुरुआत 'जन्म'
है,
और इसका मुहाना है– 'मृत्यु का द्वार'!!

जो लोग इंतजार करते हैं उन्हें केवल उतना ही मिलता है
जितना कोशिश करने वालों के पास होता है।

~ अब्दुल कलाम

द्वंद्व

भाव्या सक्सेना
पुत्री मुकेश कुमार सक्सेना
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)
केंद्रीय कार्यालय

तुम अंतर्मन में झांको पार्थ।
इस दुविधा से निकलो पार्थ।।
समझो जीवन का भावार्थ।
मैं तुम्हें जगाने आया हूं।
कुछ तुम्हें बताने आया हूं।।
राम भी मैं रावण भी मैं।
जीवन और मरण भी मैं ।।
कुरुक्षेत्र का रण भी मैं।
सर्वगुण संपन्न भी मैं।।
मुझसे ही तुम आते हो।
मुझमें ही मिल जाते हो।।
रिश्तों के पेड़ लगाते हो ।
रिश्तों के जंगल में कहीं भटक से जाते हो।।
तुम मुझको भूल जाते हो।
तुम मुझसे दूर जाते हो।।
जिस यश पर इतराते हो।

यहीं छोड़ कर जाते हो।।
इन्हें मारने से कतराते हो।
क्या संग इन्हें ले जाते हो।।
हे पार्थ! मैं तुम्हें जगाने आया हूं।
कुछ तुम्हें बताने आया हूं।।
पांडव भी मैं, कौरव भी मैं।
तुम्हारा यह गौरव भी मैं।।
फरसा हूं, त्रिशूल हूं।
मैं कुरुक्षेत्र की धूल हूं।।
मैं मुरलीधर, मैं माखनचोर।
मुझसे चलती जीवन डोर।।
मैं पंचमुखी, मैं परशुराम।
मुझको कहते हैं भगवान ।।
हे गांडीवधारी अर्जुन! मेरी बातों पर ध्यान धरो।
तुम जितनों को मारोगे।
उतनों का जीवन तारोगे ।।
तुम मुझ पर अब विश्वास करो।
शस्त्र उठाओ, प्रहार करो!!

जीवन भव्य होना चाहिए, लम्बा नहीं।

~ अम्बेडकर

बुलबुला

सन्तोष कुमार
(लेखापरीक्षक)
केंद्रीय कार्यालय

***वह आत्मविश्वास से चमकती निगाहों में सपने पालती रही
कभी चादनी रात और कभी बारिश में गुनगुनाती हुयी
खुली हवा में उड़ाती अपनी बेबाक मनचाही बातें
इस उम्मीद में, कि कोई उसका भी वजूद समझे...***

***और जीवन के इस फलसफे में,
बस हार–जीत के फासलों का दायरा समेटने की कोशिश में..
लफ्ज जुबान छोड़कर कागज का दामन थामते हुए,
जैसे चमकता हो कोई कांच का टुकड़ा रेत में..
फिर बिखरा ऐसा कि न तो नदरअंदाज कर पाए और न हीं
समेटा गया,
खराशें इतनी कि न निगला और न ही थूक पाया, उस पर
गिरहें इतनी,
कि लाख कोशिशों के बावजूद न कोई छोर दिखा न ही सार
मिला.....***

या जैसे बुलबुला हो कोई पानी की सतह में,
उसी के आगोश में बनता भी है, बिखरता भी है..
कि सर्द रात का क्या है, सुबह फिर धूप खिलेगी

जस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है,
वह उन्नत नहीं हो सकता।

~ डॉ. राजेंद्र प्रसाद

उम्मीदों का सूरज

रिंकू
(लेखापरीक्षक)
शाखा कार्यालय, कटक

धुंधली सी राहें, अनगिनत सवाल,
मन में उलझन, आंखों में मलाल।
पर दिल में छिपी, एक चिंगारी है,
उम्मीदों का सूरज, अब भी जारी है।

गिरकर उठना, यह जीवन का सार,
हार में भी छिपी, जीत की पुकार।
कांटों से डरना नहीं, है काम मेरा,
फूलों की खुशबू है, लक्ष्य सुनहरा।

अंधियारों से लड़ना, है मेरी आदत,
सपनों को बुनना, है मेरी चाहत।
कलियां खिलेंगी, महकेगा हर बाग,
मेहनत की लौ से, जागेगा अनुराग।

आंधी आये चाहे, तूफान आए,
लक्ष्य की ओर, कदम बढ़ाते जाएं।
विश्वास की डोर, कभी न टूटे,
सफलता का सूरज, कभी न डूबे।

नया सवेरा, नई उमंग लाए,
हर दिल में आशा का दीप जलाए।
खुद पर भरोसा, सबसे बड़ी जीत,
कर्मठ बनो तुम, गाओ विजय गीत।
हर पल नई सीख, हर क्षण नया ज्ञान,
आगे बढ़ते रहो, यहीं है पहचान।
उम्मीदों का सूरज, चमकेगा जरूर,
मेहनत से होगा, हर सपना भरपूर।

महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि हर बच्चे को पढ़ाई मिलनी चाहिए,
बल्कि हर बच्चे की पढ़ाई की इच्छा पूरी होनी चाहिए।

~ जॉन लबॉक

आशा का दीप

अभिषेक कुमार
(लेखापरीक्षक)
शाखा कार्यालय, कटक

अंधेरों में डूबी यह रात,
खोया है हर एक जज्बात।
पर दिल में है एक छोटी सी आस,
जलेगा फिर से उम्मीद का वास।

टूटे सपने, बिखरे हैं ख्वाब,
रोता है मन, है ये इताब।
पर हिम्मत न हारेंगे हम कभी,
उठेंगे फिर से, बनकर अजनबी।

सूरज की किरणें जब आएंगी,
नई रोशनी हर ओर छाएगी।
आशा का दीपक जलाएंगे हम,
खुशियों के गीत फिर से गाएंगे हम।

राहों में कांटे हों चाहे हजार,
चले जाएंगे हम बनकर दिलदार।
विश्वास की डोर न टूटने देंगे,
सफलता के फूल फिर खिलेंगे।

हर मुश्किल को पार करेंगे,
नई मंजिल पर हम पहुंचेंगे।
आशा की लौ बुझने न देंगे,
सपनों को सच करके रहेंगे।

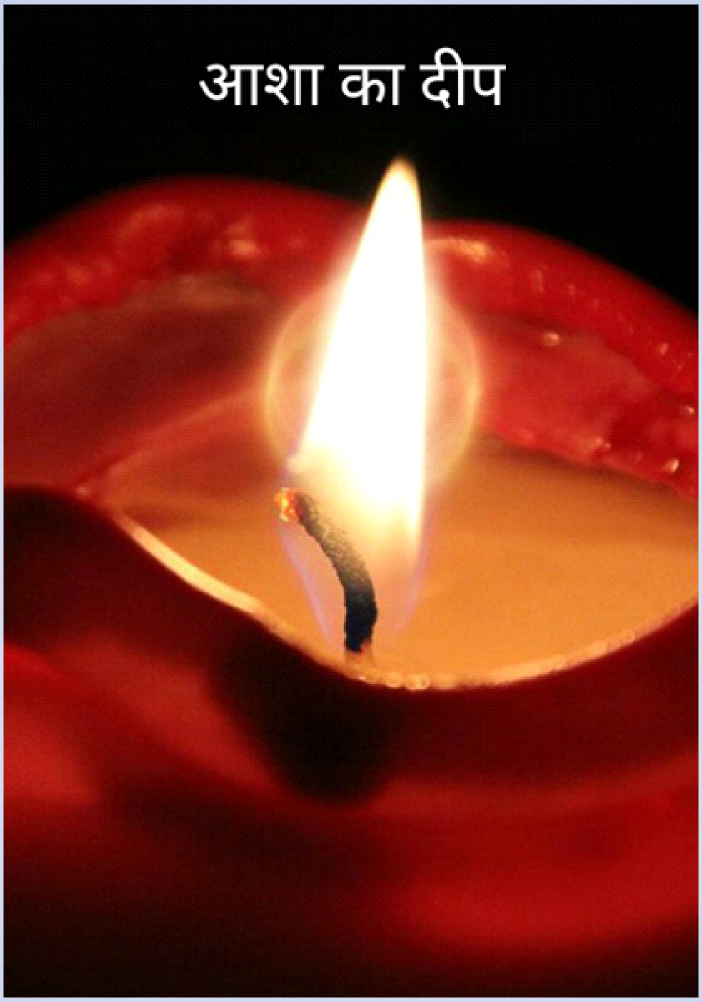

आशा का दीप जला कर रखेंगे,
यही उम्मीद बना कर रखेंगे।

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है।

~ सुमित्रानंदन पंत

आंखें

नवीन कुमार
(लेखापरीक्षक)
शाखा कार्यालय, कटक

आंखें ही तो हैं
जो ईश्वर द्वारा दिए दो अनमोल रत्न हैं
जो कुदरत के हर प्राणी में नजर आती हैं
जो कुदरत की खूबसूरती को दिखाती हैं
जो लोगों को प्यार करना सिखलाती हैं ।
आंखें ही तो हैं
जो हमारी खूबसूरती का आइना हैं
जो हमारे सुंदर विचारों को दर्शाती हैं
जो हमारे इरादों को बतलाती हैं
जो कभी झूठ नहीं बोलती हैं ।
आंखें ही तो हैं
जो कभी मां के गुस्से का इजहार कराती हैं
जो कभी मां की ममता का इजहार कराती हैं
जो खुशी और गम दोनों में बहती हैं
जो गहरे राज को भी बता देती हैं।

आंखें ही तो हैं
जो जुबां चुप रहने पर भी बहुत कुछ कहती हैं
जो दिल की बातों को बयां करती हैं
जो आम को भी खास बना देती हैं
जो सोते और जागते सपने दिखाती हैं।
आंखें ही तो हैं
जो जब खुलती हैं तो लोग इन्हें रुलाते हैं
जो जब बंद होती हैं तो लोगों को रुला देती हैं
कोटी–कोटी नमन हैं उस ईश्वर को
जिसने दिए हैं ये दो अनमोल रत्न (आंखें)।

हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है।

~ मैथिलीशरण गुप्त

ऑडिट का डर

शमीम अहमद
(लेखापरीक्षक)
केंद्रीय कार्यालय

केंद्रीय कार्यालय में सुबह के ठीक 9 बजे थे। बाबू हरिराम समय पर अपनी सीट पर आ चुके थे। उनके चेहरे पर वही चिर–परिचित मुस्कान थी – जिसमें अनुभव, हास्य और थोड़ा–सा डर मिला हुआ था। डेस्क पर तीन फाइलें करीने से रखी थीं – एक नियुक्ति, एक ट्रांसफर और तीसरी यात्रा भत्ता क्लेम की।

हरिराम (मन ही मन):
"फाइलें तो समझ आती हैं, लेकिन ये ऑडिट की तारीख दिल की धड़कनें तेज कर देती है!"
तभी सेक्शन ऑफिसर श्रीवास्तव तेज चाल से ऑफिस में दाखिल हुए।

श्रीवास्तवः
हरिराम जी, सुना आपने? अगले हफ्ते इंटरनल ऑडिट आने वाला है।

हरिराम (सिर खुजाते हुए):
"जी सर, तभी तो आज सुबह से सपने में भी फाइलें ही घूम रही हैं। एक फाइल कह रही थी – "नोटिंग सही करो वरना ऑडिट आ जाएगा!"'

श्रीवास्तवः
"अब मजाक का समय नहीं है। Rule 3(1)(ii) कहता है – 'कर्मचारी को ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा से कार्य करना चाहिए।' ऑडिट वाले कोई मजाक में नोट नहीं बनाते!"
हरिराम ने सिर हिलाया और तुरंत ट्रांसफर फाइल पर नोटिंग शुरू कर दी – "As per rule and department's transfer policy..." लिखते हुए।
इसी बीच, चायवाली पार्वती बाई आई।

पार्वतीः
"हरिराम जी, आज तो आपका चेहरा ऐसा लग रहा है जैसे रिजल्ट का दिन हो!"

हरिरामः
"बिलकुल वैसा ही है बाई, फर्क बस इतना है कि यहां पेपर हमने खुद सेट किया है – और ऑडिट टीम उसे जांचने (पढ़ने) के लिये आ रही है!"
श्रीवास्तव भी मुस्करा दिए।

श्रीवास्तवः
"हरिराम जी, आपने पिछले TA क्लेम की फाइल में बिल की फोटोकॉपी लगा दी थी, असली बिल कहां है?"

हरिराम (थोड़ा घबराते हुए):
"वो... वो मै... असली बिल को नमी लग गई थी, तो फोटोस्टेट चिपका दी थी। पर डुप्लीकेट भी विधिवत प्रमाणित है सर। Rule 16 के अनुसार वैकल्पिक दस्तावेज मान्य हैं।"

श्रीवास्तवः
"ठीक है, लेकिन ऑडिट में हर चीज का जवाब होना चाहिए। नहीं तो 'Minor Irregularity' से 'Major Comment' बनते देर नहीं लगती।"
तभी सहायक अनुभाग अधिकारी मिस्टर शर्मा कमरे में आते हैं।

शर्माः
"हरिराम जी, ऑडिट वालों को पिछले तीन साल की 'फेसिलिटी अलाउंस' फाइलें भी चाहिए।"

हरिरामः
"सर, वो तो अलमारी के कोने में ऐसी छिपी हैं जैसे बच्चे परीक्षा से पहले किताब छिपाते हैं!"

श्रीवास्तव (हंसते हुए):
और ऑडिट वाले वो किताब ऐसे खोजते हैं जैसे CID वाला ACP प्रद्युम्न सुराग!"
सभी हंस पड़े। माहौल थोड़ा हल्का हुआ लेकिन जिम्मेदारी का भाव बना रहा।
तभी डिप्टी डायरेक्टर साहब प्रवेश करते हैं।

डिप्टी डायरेक्टरः
"श्रीवास्तव जी, हर फाइल की ट्रैकिंग, उचित अनुमोदन, साक्ष्य और संलग्नक ऑडिट से पहले तैयार रखें। किसी प्रकार की चूक को गंभीर माना जाएगा।"

हरिराम (थोड़ा विनम्रता से):
"सर, मैंने हर फाइल की नोटिंग में CCS Conduct Rules का हवाला भी डाला है, और सभी दस्तावेजों की क्रॉस–साइनिंग भी पूरी कर ली है।"

डिप्टी डायरेक्टरः
"शानदार। अगर सभी ऐसे काम करें तो ऑडिट केवल औपचारिकता रह जाएगी, परेशानी नहीं।"
हरिराम मुस्कराते हुए बोलेः

सर, काम समय पर करना और नियमों का पालन ही असली कवच है। ऑडिट भी उसी को डराता है, जो खुद से डरता है।

निष्कर्षः

यह कहानी यह दर्शाती है कि विभागीय कार्यों को यदि नियमों के अनुसार समयबद्ध, प्रमाणिक और पारदर्शी तरीके से किया जाए तो ऑडिट चाहे जितना भी सख्त हो, कर्मचारी आत्मविश्वास से खड़ा रह सकता है।

नल कुम्प विभाग में हल्की–फुल्की नोकझोंक, थोड़ी कॉमेडी और बहुत सारी कर्तव्यनिष्ठा – यही है एक आदर्श कर्मचारी की पहचान।

हिंदी पखवाडा 2024 – समापन समारोह

हिंदी पखवाडा 2024 – समापन समारोह

हिंदी पखवाडा 2024 – समापन समारोह

हिंदी पखवाडा 2024 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं की झलकियां

हिंदी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह के दौरान हिंदी गृह पत्रिका 'यमुनातीरे' के बारहवें अंक का विमोचन करते हुए महानिदेशक महोदय तथा अन्य ग्रुप अधिकारी

हिन्दी दिवस 2025 एवं पांचवां अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन
महात्मा मंदिर कन्वेंशन एवं एग्जिबिशन सेंटर, गांधीनगर (गुजरात)।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
COMPTROLLER & AUDITOR GENERAL OF INDIA

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार)
दिल्ली-110054